हरिभूमि
हिसार-हांसी भूमि
रोहतक, रविवार 24 मई 2026

12 चेयरपर्सन के खिलाफ 13 पार्षदों ने डीसी को सौंपा

12 ओएसजीयू ने मेधावी छात्रों को पुरस्कार देकर किया सम्मानित

खबर संक्षेप

6.520 ग्राम हेरोइन सहित दो युवक पकड़े

हिसार। जिला में नशा तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत मंगाली चौकी पुलिस ने मगांली कुटिया के पास से दो नशा तस्करो को गिरफ्तार करके उनसे 6 ग्राम 520 मि.ग्राम हेरोइन बरामद की है। गिरफ्तार किये गये आरोपियों की पहचान रावतखेड़ा निवासी अजय व पवन के रुप में हुई है। मंगाली चौकी प्रभारी एएसआई विनोद कुमार ने बताया कि वे अपनी पुलिस टीम के साथ गश्त पर थे। इसी दौरान एक सूचना के आधार पर दो युवको को काबू करके उनकी तलाशी ली तो उनके कब्जे से हेरोइन बरामद हुई। दोनों पर आजाद नगर थाना में केस दर्ज कर लिए गए हैं।

14.67 ग्राम हेरोइन सहित दो महिलाएं गिरफ्तार

हिसार। बरवाला पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के दो अलग-अलग मामलों में कार्रवाई करते हुए दो महिलाओं को 14.67 ग्राम हेरोइन (चिट्टा) सहित गिरफ्तार किया है। पुलिस उन दोनों महिलाओं से पूछताछ कर रही है।

बरवाला थाना प्रभारी निरीक्षक कर्मजीत ने बताया कि गिरफ्तार की गई महिला आरोपियों की पहचान वार्ड नंबर 14, बरवाला के रूप में हुई है। पुलिस टीम ने गुप्त सूचना एवं नियमित गश्त के दौरान कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपियों को काबू किया। तलाशी लेने पर उनके कब्जे से कुल 14.67 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। पुलिस ने दोनों पर केस दर्ज कर लिया है। पुलिस इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की पहचान कर उनकी गिरफ्तारी के प्रयास कर रही है।

पुलिस ने 13 बोतल अवैध शराब सहित एक को पकड़ा

आदमपुर। अवैध शराब तस्करों के खिलाफ चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत कार्रवाई करते हुए पुलिस ने मोहब्बपुर गांव से एक व्यक्ति को 13 बोतल अवैध शराब सहित काबू किया है। थाना प्रभारी डीएसपी प्रिया ने बताया कि पकड़े गये आरोपी की पहचान मोहब्बतपुर निवासी ओमप्रकाश के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि एएसआई पवन कुमार ने गश्त के दौरान ढाणी मोहब्बतपुर के पास शक के आधार पर एक एक व्यक्ति को काबू करके तलाशी ली तो उसके कब्जे से अवैध शराब की 13 बोतल मिली।

सट्टा खाइवाली करता 20,400 नकदी सहित काबू

नारनौंद। सीआईए नारनौंद पुलिस टीम ने सट्टा खाईवाली करने वाले एक युवक को काबू कर उसके कब्जे से 20,400 की नकदी, सट्टा पर्चियां व अन्य सामान बरामद किया है। मुख्य सिपाही कुलदीप ने बताया कि पुलिस टीम को सूचना मिली कि एक व्यक्ति भैणी अमीरपुर बस स्टैंड के पास सरेआम सट्टा खाईवाली कर रहा। इस पर पुलिस द्वारा एक बोगस ग्राहक के माध्यम से 500 रुपए देकर सट्टा नंबर लगवाया गया।

गिरफ्तारी तक अंतिम संस्कार न करने पर अड़े परिजन, पुलिस ने दिया कड़ी कार्रवाई का आश्वासन

दसवीं के छात्र को ट्रैक्टर ने कुचला, परिवार में मातम

चालक ने घायल छात्र को सबूत मिटाने के लिए अस्पताल पहुंचाने की बजाय झाड़ियों में फेंकने का आरोप

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

हांसी। पुलिस से बात करते परिजन व ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

उमरा-रोहनात रोड पर हुए दर्दनाक सड़क हादसे में दसवीं कक्षा के 16 वर्षीय छात्र की मौत हो गई। मृतक की पहचान नवनीत के रूप में हुई है, जो अपने परिवार का सबसे छोटा बेटा था। घटना के बाद गांव में शोक का माहौल है, वहीं परिजनों ने आरोपी ट्रैक्टर चालक की गिरफ्तारी तक अंतिम संस्कार न करने की चेतावनी दी है।

जानकारी के अनुसार हादसा शुक्रवार रात को हुआ। नवनीत अपने पिता मनोज के साथ बाइक पर खेत से घर लौट रहा था। रास्ते में बाइक का पेट्रोल खत्म हो गया, जिसके बाद दोनों ने बाइक को सड़क किनारे कच्ची जगह पर खड़ा कर दिया। पिता मनोज गांव से पेट्रोल लेने चले गए, जबकि नवनीत बाइक के पास ही खड़ा रहा

नवनीत के मोबाइल से पुलिस ने दी सूचना

नवनीत का फाइल फोटो

मनोज ने बताया कि जब वह पेट्रोल लेकर वापस लौट रहे थे, तभी नवनीत के मोबाइल से कॉल आई। फोन पुलिस कर्मचारियों ने किया और बताया कि उनके बेटे को ट्रैक्टर ने टक्कर मार दी है। परिजनों का आरोप है कि अवैध रूप से मिट्टी ढोने वाला तेज रफ्तार ट्रैक्टर सड़क से नीचे खड़े नवनीत को टक्कर मार गया। आरोप यह भी है कि हादसे के बाद चालक ने घायल छात्र को अस्पताल पहुंचाने की बजाय झाड़ियों में फेंक दिया और मौके से सबूत मिटाने का प्रयास किया।

शर्मनाक

- परिजनों ने ट्रैक्टर चालक से बात की तो बोला, वह पांच लोगों में माफी मांग लेगा
- आरोपियों के माफी वाले बयान से आक्रोशित हुए परिजन

माफी मांगने के बयान पर भड़के परिजन

परिजनों के मुताबिक शनिवार सुबह जब उन्होंने ट्रैक्टर चालक से बात की तो उसने कहा कि वह पांच लोगों में माफी मांग लेगा। इस बयान के बाद परिवार और ग्रामीणों में भारी रोष फैल गया। नवनीत दसवीं कक्षा में पढ़ता था और परिवार का सबसे छोटा सदस्य था। उसकी मौत से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। ग्रामीणों ने भी आरोपी चालक की जल्द गिरफ्तारी की मांग की है। मामले के जांच अधिकारी कुलदीप सिंह ने बताया कि आरोपी ट्रैक्टर चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। शव को पोस्टमार्टम के लिए हांसी के सामान्य अस्पताल में रखवाया गया है।

हिट एंड रन में घायल दूसरे युवक की मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

शहर के डाबड़ा चौक पुल पर पिछले दिनों हुए हिट एंड रन मामले में घायल दूसरे फूड डिलीवरी बॉय आजाद नगर निवासी सुरेंद्र की भी इलाज के दौरान मौत हो गई है। सुरेंद्र पिछले करीब आठ दिनों से एक निजी अस्पताल में जिंदगी और मौत के बीच जंग लड़ रहा था। पुलिस ने शनिवार को शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया। इससे पहले इस हादसे में पटेल नगर निवासी सचिन की मौके पर ही मौत हो गई थी। अब इस मामले में मृतकों की संख्या बढ़कर दो हो गई है, जिससे केस और गंभीर हो गया है। दूसरी ओर, स्कॉर्पियो चला रही आरोपी युवती पारुल की जमानत याचिका अदालत ने खारिज कर दी। न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी चारू रावत की कोर्ट ने सुनवाई के बाद आरोपी युवती की जमानत याचिका खारिज कर दी। कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद यह फैसला सुनाया। आरोपी युवती को पहले ही 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा जा चुका है। पुलिस जांच में सामने आया था कि घटना के समय 13 मई की रात को आरोपी युवती बिना ड्राइविंग लाइसेंस के स्कॉर्पियो चला रही थी। इसी आधार पर पीएलए चौकी पुलिस ने उसके खिलाफ गैर इरादतन हत्या समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कर गिरफ्तार किया था।

15 सीसीटीवी फुटेज से खुलासा

जानकारी के अनुसार आरोपी युवती गुरुग्राम में ब्यूटी पार्लर का कोर्स कर रही है। पुलिस जांच में पता चला है कि युवती अर्बन एस्टेट क्षेत्र में स्कूटी पर पहुंची थी। वहां स्कूटी छोड़कर वह अपने परिचित के साथ स्कॉर्पियो में सवार हुई। आरोप है कि तेज रफ्तार में गाड़ी चलाते हुए उसने डाबड़ा चौक पुल के पास बाइक सवार दो फूड डिलीवरी बॉय सचिन और सुरेंद्र को जोरदार टक्कर मार दी थी। हादसे के बाद दोनों युवक करीब 100 मीटर तक सड़क पर घिसटते चले गए। शुरुआत में स्कॉरपियो चालक को लेकर संशय बना रहा, लेकिन पुलिस ने करीब 15 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालने के बाद मामले का खुलासा किया। जांच में सामने आया कि घटना के समय स्कॉर्पियो आरोपी युवती ही चला रही थी।

खड़े ट्रक में चालक की जान गई , पुलिस जांच में जुटी

बरवाला। गांव बालक के पास सड़क किनारे खड़े एक ट्रक में चालक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। चालक का शव ट्रक में सीट पर मिला है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिले के नागरिक अस्पताल भिजवाया। मिली जानकारी के अनुसार बालक-चोपटा-भूना रोड पर गांव बालक के समीप एक ट्रक काफी देर से सड़क किनारे खड़ा था। इसी दौरान वहां से गुजर रहे राहगीरों की नजर ट्रक के अंदर बैठे चालक पर पड़ी, जिसकी हालत संदिग्ध दिखाई दी। जब उन्होंने पास जाकर देखा तो चालक की मौत हो चुकी थी। इसके बाद तुरंत डायल-112 पर पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस ने मृतक की पहचान पारता गांव निवासी 50 साल के कृष्ण कुमार के रूप में की है। घटना की जानकारी मिलते ही मृतक के परिजन भी मौके पर पहुंच गए।

पोस्टमार्टम के लिए भेजा शव

पुलिस ने मौके पर सीन ऑफ क्राइम टीम को भी बुलाया, जिसने घटनास्थल से आवश्यक साक्ष्य और तथ्य जुटाए। प्रारंभिक जांच के बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिले के नागरिक अस्पताल भिजवाया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि फिलहाल मौत के कारणों का स्पष्ट पता नहीं चल पाया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति पूरी तरह साफ हो सकेगी।

हिसार। चालान काटते नगर निगम की टीम। फोटो : हरिभूमि

1050 वाहनों की चेकिंग 339 वाहन पर कार्रवाई

हिसार। जिला में कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाए रखने के लिए पुलिस द्वारा दिन-रात्रि के समय विशेष गश्त अभियान लगातार चलाया जा रहा है।

इस अभियान के तहत पैदल गश्त के साथ-साथ पीसीआर, राइडर एवं ईआरवी टीमों द्वारा शहर तथा आसपास के संवेदनशील क्षेत्रों में सतत निगरानी रखी जा रही है, ताकि किसी भी प्रकार की आपराधिक गतिविधि को समय रहते रोका जा सके। इसी क्रम में पुलिस द्वारा विभिन्न स्थानों पर नाकाबंदी कर सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। इस अभियान के दौरान कुल 795 वाहनों की बारीकी से जांच की गई।

बुजुर्ग की हत्या में आरोपी पोता गिरफ्तार

- मृतक के परिजनों के बयान के आधार पर हत्या का मामला दर्ज किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

हांसी सदर पुलिस ने गांव कुंभा में बुजुर्ग की हत्या मामले में कार्रवाई करते हुए नामजद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी से वारदात में प्रयुक्त डंडा बरामद किया गया है। शेखपुरा पुलिस चौकी इंचार्ज उप निरीक्षक जयसिंह ने बताया कि गांव कुंभा निवासी एक बुजुर्ग व्यक्ति पारिवारिक विवाद के दौरान गंभीर रूप से घायल हो गए थे। घायल अवस्था में उन्हें उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलते ही पुलिस, एफएसएल टीम एवं पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण कर आवश्यक साक्ष्य जुटाए। मृतक के परिजनों के बयान के आधार पर हत्या का मामला दर्ज किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस टीम ने तेजी से कार्रवाई करते हुए नामजद आरोपी अंकित को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान आरोपी की निशानदेही पर वारदात में प्रयुक्त डंडा भी बरामद किया गया है। आरोपी को अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

हांसी। पकड़ा गया आरोपित अंकित।

ठगी के एक लाख से अधिक वापस करवाए

हिसार। साइबर क्राइम पुलिस ने साइबर अपराध के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में एक बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस की त्वरित कार्रवाई के चलते पीड़ित महिला अलका के साइबर ठगी में गंवाए हुए पैसे वापस मिल गए। थाना साइबर क्राइम प्रभारी सतेंद्र ने बताया कि उप निरीक्षक सुरेंद्र ने साइबर धोखाधड़ी के एक मामले की जांच करते हुए पीड़ित महिला के ठगे गए एक लाख 20 हजार 724 रुपये उसे वापिस दिलवाए हैं। पुलिस टीम ने मामले की गहराई से जांच करते हुए तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर तकनीकी अनुसंधान और बैंक अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर ठगी गई राशि को ट्रैक किया।

पॉलीथिन के प्रयोग पर निगम ने काटे चालान

- छबील में सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करने पर किया चालान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

नगर निगम द्वारा शहर में सिंगल यूज़ प्लास्टिक के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में शीश महल के सामने छबील लगाने वाले लोगों को सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग करते हुए पाए जाने पर 500 रुपये का चालान किया गया। इसी के साथ ही एएसआई विजेता, एएसआई राहुल, एएसआई रोहित ने पुरानी सब्जी मंडी के क्षेत्र में 2 दुकानदारों के 1500-1500 रुपये के व 2 दुकानदारों के 500-500 रुपये के सिंगल यूज प्लास्टिक व पॉलीथिन का प्रयोग करने पर चालान किए। इस प्रकार नगर निगम ने कुल 5 चालन किए। इसके अलावा मौके पर मौजूद लोगों को जागरूक करते हुए भविष्य में धार्मिक आयोजनों एवं छबीलों में प्लास्टिक सामग्री का प्रयोग न करने की अपील की गई।

नगर निगम अधिकारियों ने बताया कि गर्मी के मौसम में शहरभर में विभिन्न स्थानों पर छबीलें लगाई जाती हैं, जहां बड़ी मात्रा में प्लास्टिक के गिलास एवं अन्य सिंगल यूज़ प्लास्टिक सामग्री का उपयोग किया जाता है। नगर निगम आयुक्त नीरज के निर्देशानुसार यदि कोई व्यक्ति या संस्था सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग करते हुए पाई जाती है, तो उसके खिलाफ चालान सहित नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। निगम आयुक्त ने शहरवासियों अपील की है कि छबीलों एवं धार्मिक आयोजनों में प्लास्टिक गिलासों के स्थान पर स्टील के गिलासों या अन्य पर्यावरण अनुकूल सामग्री का प्रयोग करें, ताकि पर्यावरण को स्वच्छ और सुरक्षित रखा जा सके।

बिजली-पानी की मांग को धरने पर ग्रामीण

- सरकार की ओर से आया 26 को बातचीत का बुलावा, सांसद जेपी मौके पर पहुंचे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

हांसी। धरने पर बैठे ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

क्षेत्र के गांव चानौत में बिजली व पानी की मांग पर ग्रामीणों का धरना शनिवार को आठवें दिन भी जारी रहा। ग्रामीणों का कहना है कि जब तक उनकी मांग नहीं मानी जाएगी, वे धरने पर डटे रहेंगे। ग्रामीणों के धरने के आठवें दिन हिसार के सांसद जयप्रकाश भी पहुंचे। उन्होंने ग्रामीणों की मांग को जायज बताते हुए प्रशासन एवं सरकार से मांग की कि उनकी समस्या का निदान करें। उन्होंने कहा कि जनता को बिजली व पानी जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाना सरकार की जिम्मेवारी है लेकिन जब सरकार इस जिम्मेवारी को पूरा करने में असफल रहती है तो नागरिकों को आंदोलन का सहारा लेना पड़ता है। उधर, ग्रामीणों को सरकार की ओर से 26 मई को बातचीत करने के लिए बुलावा आया है। प्रशासन को उम्मीद है कि इसमें ग्रामीण सहमत हो जाएंगे। दूसरी तरफ ग्रामीणों ने सख्त रुख अपनाते हुए ऐलान किया है कि यदि 26 मई की बातचीत में मांग नहीं मानी गई तो ग्रामीण खुद राजली नहर से हांसी शहर को जाने वाली पाइपलाइन में कनेक्शन करेंगे।

नारनौंद। प्रदर्शन करते ग्रामीण सफाई कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

सफाई कर्मचारियों की हड़ताल नौवें दिन भी जारी

नारनौंद। ग्रामीण सफाई कर्मचारियों की हड़ताल नौवें दिन में प्रवेश कर गई है। इसकी कारण गांव में सफाई व्यवस्था चरमरा गई हैं। लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं सफाई कर्मचारियों ने अपनी मांगों को लेकर सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और स्पष्ट कहा कि जब तक हमारी मांगे पूरी नहीं होगी जब तक हड़ताल जारी रहेगी। उनकी मुख्य मांगों में ग्रामीण सफाई कर्मचारियों को विधानसभा में एक्सग्रेसिया पॉलिसी बनाकर पक्का किया जाए, ग्रामीण सफाई कर्मचारियों में से ही एक पढ़ा लिखा सफाई दरोगा लगाया जाए, मृतक के आश्रितों को सरकारी नौकरी, 50 लाख रुपये मुआवजा दिया जाना आदि शामिल है। इस अवसर पर फायर ब्रिगेड के राज्य प्रधान जसबीर श्योकेंद, जिला उप प्रधान देवेंद्र लोहान, ब्लॉक प्रधान रणधीर सिंह ने समर्थन सफाई कर्मचारियों की हड़ताल का समर्थन किया। धरने पर राजपाल नाडा, सतीश भैणी, शिवकुमार, राजबीर, इंद्र, संजय मिर्चपुर, सुनीता, सुमित्रा, बिमला, निर्मला,लखपति आदि मौजूद रहे।

बीमा पॉलिसी फंड रिलीज के नाम पर 8 लाख रुपये की साइबर ठगी

- पुलिस ने दो आरोपी दिल्ली से किए गिरफ्तार, आरोपियों के कब्जे से पांच लाख रुपये बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

एएसपी मंयक मुदगिल के नेतृत्व में साइबर थाना पुलिस ने बीमा पॉलिसी का फंड रिलीज करवाने के नाम पर लाखों की साइबर ठगी करने वाले गिरोह के खिलाफ कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को दिल्ली से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से ठगी की राशि में से 5 लाख रुपये भी बरामद किए हैं। आरोपियों की पहचान मुंबई निवासी भरत जनक सिंह व हावड़ा निवासी मोहम्मद मोशिरुल हक के रूप में हुई है। ये दिल्ली में रह रहे थे। साइबर थाना के पीएसआई प्रवेश कुमार ने बताया कि इस संबंध में हिसार निवासी महिला ने शिकायत दी थी। शिकायत के अनुसार उसे इस वर्ष अप्रैल अलग-अलग मोबाइल नंबरों से फोन कॉल प्राप्त हुई। आरोपियों ने स्वयं को बीमा लोकपाल कार्यालय का लीगल ऑफिसर बताकर बीमा पॉलिसी का फंड रिलीज करवाने का झांसा दिया। आरोपियों ने शिकायतकर्ता से आधार कार्ड, पैन कार्ड तथा बैंक संबंधी गोपनीय जानकारी हासिल कर प्रोसेसिंग फीस व अन्य चार्ज के नाम पर विभिन्न बैंक खातों में पैसे जमा करवाए। आरोपियों ने व्हाट्सएप और ईमेल के माध्यम से फर्जी दस्तावेज एवं प्रोफॉर्मा भेजकर शिकायतकर्ता को अपने झांसे में लिया तथा अलग-अलग तिथियों में कई ऑनलाइन ट्रांजेक्शन करवा लिए।

नौकरी लगवाने के नाम पर धोखाधड़ी वाला काबू

हिसार। पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने स्वास्थ्य विभाग में नौकरी लगाने के नाम पर लाखों की धोखाधड़ी करने वाले एक आरोपी को दिल्ली से गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान दिल्ली के नांगलोई निवासी नितिन के रूप में हुई है। जांच अधिकारी उप निरीक्षक वेदपाल ने बताया कि इस संबंध में सिवानी खंड के गांव गुरेरा निवासी अशोक ने शिकायत दी थी। शिकायत के अनुसार नांगलोई निवासी नितिन के साथ उसकी जान पहचान थी। न नितिन के इस झांसे में आकर अशोक ने एक मध्यस्थ के रूप में काम करना शुरू कर दिया। अशोक ने मोटे कमीशन के लालच में आकर अपने आसपास के ग्रामीणों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों से मोटी रकम वसूल की और नौकरी लगवाने के नाम पर वह सारे पैसे नितिन को सौंप दिए।

उम्मीद की किरण बनी प्राध्यापिका सुमन

ईंट भट्टे के 30 बच्चों में पहुंच रही शिक्षा की रोशनी

सुमन मलिक का शिक्षण कार्य केवल विद्यालय तक सीमित नहीं, इसके बाद भी दे रही शिक्षा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बरवाला

बरवाला। प्राध्यापिका सुमन मलिक ईंट भट्टे पर रहने वाले बच्चों को पढाते हुए

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सरसौद में पीजीटी इतिहास के पद पर कार्यरत प्राध्यापिका सुमन मलिक शिक्षा के माध्यम से जरूरतमंद बच्चों के जीवन में नई रोशनी ला रही हैं। वह विद्यालय में विद्यार्थियों को इतिहास के साथ-साथ भूगोल, राजनीतिक विज्ञान और हरियाणा सामान्य ज्ञान की भी शिक्षा देकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवा रही हैं। सुमन मलिक का शिक्षण कार्य केवल विद्यालय तक सीमित नहीं है। वह प्रतिदिन विद्यालय समय के बाद गांव सरसौद से गांव बालक जाने वाली सड़क पर स्थित एक ईंट भट्टे पर रहने वाले करीब 30 बच्चों को निःस्वार्थ भाव से पढ़ाती हैं। ये बच्चे प्रतिदिन उत्सुकतापूर्वक उनका इंतजार करते हैं।

परिचालक के अभद्र व्यवहार के बाद मिली प्रेरणा

बच्चों को पढ़ाने की प्रेरणा उन्हें एक घटना से मिली। एक बार ईंट भट्टे पर काम करने वाला एक परिवार अनजाने में गलत बस में सवार हो गया। टिकट लेने के दौरान बस परिचालक ने परिवार के मुखिया के साथ अभद्र व्यवहार किया। उस समय सुमन मलिक भी उसी बस में सफर कर रही थीं। उस परिचालक के व्यवहार ने सुमन मलिक को ईंट भट्टे पर रहने वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया। उस दिन से लेकर आज तक प्राध्यापिका सुमन मलिक उन बच्चों को पढ़ा रही है। प्राध्यापिका सुमन मलिक पुत्री जयसिंह मलिक गांव उमरा जिसकी शादी गांव खेदड़ के सुभाष सहारण के साथ हो रखी है को इस मुकाम तक पहुंचाने में उनके पति सुभाष सहारण और उनकी सखी सुनीता का अहम योगदान है।

शुरुआत में चुनौतीपूर्ण रहा बच्चों को पढ़ाना

शुरुआत में इन बच्चों को पढ़ाना उनके लिए चुनौतीपूर्ण रहा, क्योंकि अधिकांश बच्चों के लिए पढ़ना-लिखना बिल्कुल नया अनुभव था। बावजूद इसके, सुमन मलिक ने अपने प्रयासों में कभी कमी नहीं आने दी। धीरे-धीरे उनके प्रयास रंग लाने लगे और बच्चे पढ़ाई में रुचि लेने लगे। प्राध्यापिका सुमन मलिक बच्चों के लिए प्रतिदिन अपने घर से भोजन बनाकर भी लाती हैं तथा अपने सहयोगियों की मदद से उन्हें पढ़ाई की सामग्री उपलब्ध करवाती हैं। उनके इस प्रयास से ईंट भट्टे पर रहने वाले बच्चों के जीवन में शिक्षा की नई उम्मीद जगी है।

बाजार में बढ़ी अनिश्चितता, निवेशकों की पहली पसंद बन रहे लिक्विड फंड

अप्रैल में लिक्विड फंड्स ने लगभग 5.5 से 6 प्रतिशत तक रिटर्न दिया

पूंजी सुरक्षित और जरूरत पड़ने पर आसानी से निकाला जा सकता है पैसा

शेयर बाजार में लगातार जारी उतार-चढ़ाव ने निवेशकों की चिंता बढ़ाई, रहना होगा अलर्ट

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

विदेशी बाजारों में तनाव, वैश्विक आर्थिक मंदी की आशंकाएं और भू-राजनीतिक घटनाक्रम निवेशकों को जोखिम लेने से रोक रहे

वैश्विक तनाव, शेयर बाजार की अस्थिरता और आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच निवेशकों का भरोसा अब सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर तेजी से बढ़ रहा है। यही वजह है कि अप्रैल 2026 में लिक्विड फंड्स में निवेश सात साल के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गया। निवेशक फिलहाल जोखिम से दूरी बनाकर ऐसे विकल्प चुन रहे हैं जहां पूंजी अपेक्षाकृत सुरक्षित रहे और जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से निकाला भी जा सके। म्यूचुअल फंड उद्योग से जुड़े संगठन एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 2026 में लिक्विड फंड्स में शुद्ध निवेश 1.65 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया। पिछले वर्ष अप्रैल में यह आंकड़ा 1.19 लाख करोड़ रुपये था। यानी एक साल में लगभग 46 हजार करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की गई। यह बीते कई वर्षों में सबसे बड़ा उछाल माना जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि शेयर बाजार में लगातार जारी उतार-चढ़ाव ने निवेशकों की चिंता बढ़ा दी है। विदेशी बाजारों में तनाव, वैश्विक आर्थिक मंदी की आशंकाएं और भू-राजनीतिक घटनाक्रम निवेशकों को ज्यादा जोखिम लेने से रोक रहे हैं। ऐसे माहौल में लोग अपने निवेश को सुरक्षित रखने के लिए लिक्विड फंड्स का सहारा ले रहे हैं।

बैंकिंग सिस्टम में बढ़ी नकदी बनी बड़ी वजह

विशेषज्ञों के अनुसार इस बढ़ोतरी के पीछे बैंकिंग सिस्टम में मौजूद अतिरिक्त नकदी भी अहम कारण रही। अप्रैल के दौरान बैंकिंग सिस्टम में अतिरिक्त नकदी 2 लाख करोड़ से 5.5 लाख करोड़ रुपये के बीच रही, जबकि पिछले साल यह आंकड़ा काफी कम था। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की नीतियों और बाजार में पर्याप्त लिक्विडिटी बनाए रखने के प्रयासों का असर भी साफ दिखाई दिया। बैंकों और कंपनियों के पास अतिरिक्त नकदी रही, जिसे उन्होंने बेहतर रिटर्न और सुरक्षित पार्किंग के लिए लिक्विड फंड्स में निवेश किया।

कम जोखिम में बेहतर रिटर्न का आकर्षण

लिक्विड फंड्स में बढ़ती दिलचस्पी की एक और बड़ी वजह इनका अपेक्षाकृत बेहतर रिटर्न रहा। अप्रैल में लिक्विड फंड्स ने लगभग 5.5 से 6 प्रतिशत तक का रिटर्न दिया, जबकि ओवरनाइट दरें लगभग 5 प्रतिशत के आसपास रहीं। इसके अलावा सर्टिफिकेट ऑफ डिपॉजिट (सीडी) की ब्याज दरें 6.5 प्रतिशत से 7.5 प्रतिशत तक पहुंचीं, जिसने निवेशकों को आकर्षित किया। ऐसे में कम जोखिम के साथ थोड़े बेहतर रिटर्न की तलाश कर रहे निवेशकों के लिए लिक्विड फंड्स एक बेहतर विकल्प बनकर उभरे। विशेषज्ञ मानते हैं कि जब शेयर बाजार में अस्थिरता बढ़ती है, तब निवेशक पूंजी बचाने को प्राथमिकता देते हैं। ऐसे समय में इक्विटी निवेश की तुलना में लिक्विड फंड्स ज्यादा सुरक्षित माने जाते हैं क्योंकि इनमें पैसा कम अवधि वाले डेट इंस्ट्रूमेंट्स में लगाया जाता है।

आखिर क्या होते हैं लिक्विड फंड्स

लिक्विड फंड्स डेट म्यूचुअल फंड की श्रेणी में आते हैं। ये निवेशकों का पैसा ट्रेजरी बिल्स, सरकारी प्रतिभूतियों, कॉल मनी और अन्य शॉर्ट टर्म मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं। इन फंड्स की खासियत यह होती है कि इनमें निवेश की मैच्योरिटी अवधि बहुत कम होती है। आमतौर पर ये 91 दिनों तक की अवधि वाले साधनों में निवेश करते हैं। इसी कारण इनमें जोखिम अपेक्षाकृत कम माना जाता है और जरूरत पड़ने पर निवेशक आसानी से पैसा निकाल सकते हैं। यही वजह है कि कम समय के लिए पैसा पार्क करने वाले निवेशक लिक्विड फंड्स को पसंद करते हैं। उदाहरण के तौर पर अगर किसी व्यक्ति को दो-तीन महीने बाद बच्चों की फीस जमा करनी हो, यात्रा पर जाना हो या कोई अन्य छोटा वित्तीय लक्ष्य पूरा करना हो, तो वह रकम लिक्विड फंड में रख सकता है।

सेविंग अकाउंट से बेहतर विकल्प क्यों

वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि लिक्विड फंड्स कई मामलों में सेविंग अकाउंट से बेहतर साबित हो सकते हैं। बैंक सेविंग अकाउंट में जहां ब्याज दरें सीमित रहती हैं, वहीं लिक्विड फंड्स थोड़े बेहतर रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं। इसके अलावा इनमें निवेश और निकासी की सुविधा भी काफी आसान होती है। हालांकि यह ध्यान रखना जरूरी है कि लिक्विड फंड्स पूरी तरह जोखिम मुक्त नहीं होते, लेकिन अन्य म्यूचुअल फंड श्रेणियों की तुलना में इनमें जोखिम कम माना जाता है।

निवेशकों को क्या रखना चाहिए ध्यान

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि लिक्विड फंड्स को लंबी अवधि के निवेश विकल्प के तौर पर नहीं देखना चाहिए। ये मुख्य रूप से कम अवधि की जरूरतों और अस्थायी निवेश के लिए बेहतर माने जाते हैं। अगर निवेशक लंबी अवधि में ज्यादा रिटर्न चाहते हैं, तो इक्विटी या हाइब्रिड फंड्स बेहतर विकल्प हो सकते हैं। वहीं जिन लोगों को कुछ महीनों के लिए सुरक्षित निवेश चाहिए, उनके लिए लिक्विड फंड्स उपयोगी साबित हो सकते हैं। इसके साथ ही निवेशकों को किसी भी फंड में निवेश करने से पहले उसकी रेटिंग, पोर्टफोलियो गुणवत्ता, एक्सपेंस रेशियो और फंड हाउस की विश्वसनीयता जरूर जांचनी चाहिए।

सुरक्षित निवेश की ओर बढ़ता रुझान

वर्तमान आर्थिक माहौल यह संकेत दे रहा है कि निवेशक अब केवल ऊंचे रिटर्न नहीं, बल्कि सुरक्षा और स्थिरता को भी प्राथमिकता दे रहे हैं। बाजार में अनिश्चितता बढ़ने पर सुरक्षित निवेश विकल्पों की मांग तेज होना स्वाभाविक माना जाता है। लिक्विड फंड्स में रिकॉर्ड निवेश इसी बदलती निवेश मानसिकता को दर्शाता है, जहां निवेशक फिलहाल जोखिम कम रखते हुए स्थिर और सुरक्षित विकल्पों की तलाश में हैं।

5 म्यूचुअल फंड्स ने बनाया निवेशकों का भरोसा मजबूत

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में लगातार बढ़ती अस्थिरता के बीच निवेशकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती सही म्यूचुअल फंड चुनने की होती है। आज बाजार में 1500 से ज्यादा म्यूचुअल फंड स्कीम मौजूद हैं और हर फंड खुद को सबसे बेहतर साबित करने की कोशिश करता है। ऐसे में केवल ज्यादा रिटर्न देखकर निवेश करना जोखिम भरा साबित हो सकता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि किसी भी फंड का सही आकलन केवल रिटर्न से नहीं, बल्कि उसके "रिस्क एडजस्टेड रिटर्न" से किया जाना चाहिए। यानी ऐसा फंड जो जोखिम कम रखते हुए लगातार बेहतर प्रदर्शन करे। हाल ही में किए गए एक विस्तृत विश्लेषण में कई म्यूचुअल फंड स्कीमों को शार्प रेशियो, सॉर्टिनो रेशियो, स्टैंडर्ड डिविएशन और रोलिंग रिटर्न जैसे मानकों पर परखा गया। इस विश्लेषण में पांच फंड सबसे मजबूत विकल्प बनकर सामने आए।

एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड

सूची में पहला नाम एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड का है। यह फंड हाल ही में 1 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) पार करने वाला चुनिंदा फंड बना है। फंड ने पिछले कई वर्षों में लगातार मजबूत प्रदर्शन किया है। रोलिंग रिटर्न के आधार पर इसने तीन और पांच साल की अवधि में 19 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न देने की क्षमता दिखाई है। विशेषज्ञों के मुताबिक, इस फंड की सबसे बड़ी ताकत बाजार गिरने के दौरान नुकसान को सीमित रखना रही है। इसका शार्प रेशियो और सॉर्टिनो रेशियो भी श्रेणी के अन्य फंड्स से बेहतर रहा। फंड का बड़ा निवेश बैंकिंग, ऑटोमोबाइल, हेल्थकेयर और आईटी सेक्टर में है। एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और एसबीआई जैसी कंपनियां इसकी प्रमुख होल्डिंग्स में शामिल हैं।

बंधन लार्ज एंड मिड कैप फंड

दूसरे स्थान पर बंधन लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। इस फंड ने पिछले 10 वर्षों में अपनी श्रेणी के अधिकांश फंड्स से बेहतर प्रदर्शन किया है। तीन साल की रोलिंग अवधि में इस फंड ने औसतन 24 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न दिया, जबकि श्रेणी का औसत लगभग 18 प्रतिशत रहा। यह फंड लगातार बदलते बाजार के हिसाब से पोर्टफोलियो में बदलाव करता है और इसी रणनीति ने इसे मजबूत बनाया है। फंड का निवेश मुख्य रूप से फाइनेंशियल, सर्विसेज, एनर्जी और हेल्थकेयर सेक्टर में है।

निप्पोन इंडिया लार्ज कैप फंड

निप्पोन इंडिया लार्ज कैप फंड भी जोखिम और रिटर्न के संतुलन के मामले में मजबूत विकल्प माना गया। पिछले 10 वर्षों में किसी भी सात साल की अवधि में इस फंड ने औसतन 15 प्रतिशत से ज्यादा रोलिंग रिटर्न दिया। यह श्रेणी औसत और निफ्टी 100 दोनों से बेहतर रहा। विशेषज्ञों के अनुसार इसकी सबसे बड़ी ताकत स्थिर प्रदर्शन और मजबूत स्टॉक चयन है। लंबे समय से एक ही फंड मैनेजर के नेतृत्व में रहने का फायदा भी इसे मिला है। फंड की प्रमुख हिस्सेदारी बैंकिंग, एनर्जी, हेल्थकेयर और कंज्यूमर सेक्टर में है।

एचडीएफसी मिड कैप फंड एसआईपी

एचडीएफसी मिड कैप फंड लंबे समय से मिडकैप निवेशकों के बीच लोकप्रिय बना हुआ है। अगर किसी निवेशक ने 10 साल पहले हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी शुरू की होती, तो आज उसका निवेश लगभग 35 लाख रुपये तक पहुंच चुका होता। फंड ने लंबे समय में करीब 20 प्रतिशत सालाना रिटर्न देने का रिकॉर्ड बनाया है। विशेषज्ञों का कहना है कि मिडकैप श्रेणी में अस्थिरता ज्यादा होती है, लेकिन इस फंड ने लगातार बेहतर संतुलन बनाए रखा। फंड का निवेश मुख्य रूप से फाइनेंशियल, हेल्थकेयर और ऑटोमोबाइल सेक्टर में फैला हुआ है।

इनवेस्को इंडिया स्मॉल कैप फंड

सूची में पांचवां नाम इनवेस्को इंडिया स्मॉल कैप फंड का रहा। स्मॉलकैप फंड्स को आमतौर पर ज्यादा जोखिम वाला माना जाता है, लेकिन इस फंड ने जोखिम के मुकाबले मजबूत रिटर्न दिया है। तीन साल की रोलिंग अवधि में इसने लगभग 26 प्रतिशत तक का रिटर्न दिया, जबकि पांच और सात साल की अवधि में भी प्रदर्शन मजबूत रहा। फंड का फोकस तेजी से बढ़ने वाली कंपनियों की पहचान कर शुरुआती दौर में निवेश करना है। इसकी प्रमुख हिस्सेदारी हेल्थकेयर, सर्विसेज, ऑटोमोबाइल और कंज्यूमर सेक्टर में है।

आखिर क्या होता है रिस्क एडजस्टेड रिटर्न

विशेषज्ञों के मुताबिक, केवल ज्यादा रिटर्न देने वाला फंड हमेशा बेहतर नहीं होता। अगर किसी फंड में उतार-चढ़ाव बहुत ज्यादा हो, तो वह निवेशकों के लिए जोखिम बढ़ा सकता है। रिस्क एडजस्टेड रिटर्न ऐसे फंड्स को पहचानने का तरीका है जो कम जोखिम के साथ स्थिर और भरोसेमंद रिटर्न देते हैं।

निवेश से पहले यह रखें ध्यान

फंड का कम से कम 5-10 साल का रिकॉर्ड देखें, फंड मैनेजर का अनुभव जांचें

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में केवल बचत करना आर्थिक सुरक्षा के लिए काफी नहीं माना जाता। बढ़ती महंगाई, रिटायरमेंट की चिंता और भविष्य की जरूरतों ने निवेश को हर नौकरीपेशा व्यक्ति की प्राथमिकता बना दिया है। ऐसे में म्यूचुअल फंड एसआईपी यानी सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान सबसे लोकप्रिय निवेश विकल्पों में शामिल हो चुका है। हालांकि निवेशकों के मन में एक सवाल हमेशा रहता है कि आखिर किस उम्र में कितनी एसआईपीकरनी चाहिए।

अपने जोखिम और निवेश अवधि के हिसाब से फंड चुनें

विशेषज्ञों का मानना है कि निवेश में सबसे बड़ा अंतर ज्यादा रकम नहीं, बल्कि जल्दी शुरुआत पैदा करती है। जितना जल्दी निवेश शुरू किया जाता है, कंपाउंडिंग उतना ही बड़ा फायदा देती है।

20 की उम्र में शुरुआत सबसे ताकतवर

वित्तीय विशेषज्ञों के मुताबिक 20 से 29 साल की उम्र निवेश की शुरुआत के लिए सबसे बेहतरीन समय माना जाता है। इस दौर में जिम्मेदारियां कम होती हैं और जोखिम लेने की क्षमता ज्यादा होती है। अगर कोई व्यक्ति 20 साल की उम्र में हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी शुरू करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत सालाना रिटर्न मिलता है, तो 60 साल की उम्र तक करीब 11.88 करोड़ रुपये का फंड तैयार हो सकता है। लेकिन अगर वही निवेश 30 साल की उम्र से शुरू किया जाए, तो अंतिम फंड घटकर लगभग 3.5 करोड़ रुपये रह जाता है। यानी सिर्फ 10 साल की देरी से संभावित संपत्ति में 8 करोड़ रुपये से ज्यादा का अंतर आ सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार इस उम्र में फ्लेक्सी कैप, मिडकैप, इंडेक्स और ईएलएसएस फंड बेहतर विकल्प माने जाते हैं क्योंकि लंबी अवधि में इनमें बेहतर ग्रोथ की संभावना रहती है। हालांकि इस उम्र में सबसे बड़ी गलती निवेश टालते रहना और जल्दी अमीर बनने के चक्कर में हाई रिस्क थीमेटिक या स्मॉलकैप फंड्स में जरूरत से ज्यादा पैसा लगाना माना जाता है।

30 की उम्र में संतुलन जरूरी

30 की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते आमतौर पर आय बढ़ती है, लेकिन जिम्मेदारियां भी तेजी से बढ़ने लगती हैं। घर का लोन, शादी, बच्चों की पढ़ाई, बीमा और रिटायरमेंट प्लानिंग जैसी जरूरतें निवेश रणनीति को प्रभावित करती हैं। अगर कोई व्यक्ति 30 साल की उम्र से हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी शुरू करता है और 60 साल तक निवेश जारी रखता है, तो 12 प्रतिशत अनुमानित रिटर्न के आधार पर लगभग 3.5 करोड़ रुपये का फंड तैयार हो सकता है। लेकिन यदि वही निवेश 40 की उम्र तक टाल दिया जाए, तो अंतिम फंड करीब 1 करोड़ रुपये तक सीमित रह सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस उम्र में संतुलित निवेश रणनीति अपनाना ज्यादा जरूरी होता है। फ्लेक्सी कैप, लार्ज एंड मिडकैप और एग्रेसिव हाइब्रिड फंड अच्छे विकल्प माने जाते हैं। इसके अलावा हर साल एसआईपी बढ़ाने की आदत यानी "स्टेप-अप एसआईपी" लंबे समय में बड़ा अंतर पैदा कर सकती है।

40 की उम्र में फोकस बदलना जरूरी

40 की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते निवेशकों का ध्यान केवल ज्यादा रिटर्न कमाने पर नहीं, बल्कि पूंजी की सुरक्षा और रिटायरमेंट प्लानिंग पर भी होता है। अगर कोई व्यक्ति 40 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है और 60 साल तक करीब 3.5 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहता है, तो उसे हर महीने लगभग 35 से 40 हजार रुपये की **SIP** करनी पड़ सकती है। विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा इसलिए क्योंकि निवेशक कंपाउंडिंग के 10 अहम साल खो देता है और समय की कमी को ज्यादा निवेश से पूरा करना पड़ता है। इस उम्र में लार्जकैप, बैलेंस्ड एडवांटेज, मल्टी एसेट और शॉर्ट ड्यूरेशन डेट फंड जैसे विकल्प बेहतर माने जाते हैं।

हर उम्र में अलग होती है निवेश रणनीति

विशेषज्ञों का मानना है कि उम्र बढ़ने के साथ निवेशकों को इक्विटी से पूरी तरह बाहर नहीं निकलना चाहिए, बल्कि अपने जोखिम और वित्तीय जरूरतों के हिसाब से पोर्टफोलियो में बदलाव करना चाहिए। युवा निवेशक ज्यादा जोखिम लेकर ग्रोथ पर फोकस कर सकते हैं, जबकि 40 के बाद स्थिरता और पूंजी संरक्षण ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है।

निवेशकों की सबसे बड़ी गलतियां

- निवेश शुरू करने में देरी करना
- बाजार गिरने पर एसआईपी बंद कर देना
- सोशल मीडिया टिप्स पर आंख बंद कर भरोसा करना
- बार-बार फंड बदलना
- बिना लक्ष्य के निवेश करना

क्या कहते हैं जानकार

विशेषज्ञों का कहना है कि म्यूचुअल फंड कोई जल्दी अमीर बनने का जरिया नहीं है। यह लंबे समय तक अनुशासन और धैर्य के साथ संपत्ति बनाने का माध्यम है। जो निवेशक जल्दी शुरुआत करते हैं, नियमित निवेश बनाए रखते हैं और बाजार की गिरावट से घबराने के बजाय टिके रहते हैं, वही लंबे समय में बड़ा फंड तैयार कर पाते हैं।

निवेश से पहले समझें जोखिम

म्यूचुअल फंड निवेश बाजार जोखिमों के अधीन होते हैं। फंड का प्रदर्शन बाजार, ब्याज दरों और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार बदल सकता है। इसलिए निवेश करने से पहले अपनी जोखिम क्षमता, वित्तीय लक्ष्य और निवेश अवधि को समझना जरूरी है। जरूरत पड़ने पर वित्तीय सलाहकार की मदद लेना भी बेहतर विकल्प हो सकता है।

निवेश के ऑप्शन, जहां सुरक्षित रहेगा पूरा पैसा

तैयारी
बिजनेस डेस्क

आज के दौर में कमाई करना जितना कठिन हो गया है, उतना ही मुश्किल सही जगह निवेश करना भी हो गया है। शेयर बाजार, क्रिप्टो और हाई रिटर्न वाले कई विकल्प लोगों को आकर्षित जरूर करते हैं, लेकिन इनमें जोखिम भी काफी रहता है। ऐसे में ज्यादातर लोग ऐसी स्कीम चाहते हैं जहां पैसा सुरक्षित रहे और रिटर्न भी भरोसेमंद मिले। भारत में सरकार समर्थित कई निवेश योजनाएं हैं जो सुरक्षा, स्थिरता और टैक्स बचत तीनों का फायदा देती हैं। अगर आप भी बिना ज्यादा जोखिम उठाए अपने भविष्य को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना चाहते हैं, तो ये कुछ निवेश विकल्प आपके लिए बेहद काम के साबित हो सकते हैं।

1. बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)

भारतीय परिवारों में फिक्स्ड डिपॉजिट यानी एफडी सबसे लोकप्रिय निवेश विकल्पों में से एक है। इसमें एक तय अवधि के लिए पैसा जमा किया जाता है और बैंक पहले से निश्चित ब्याज देता है। एफडीकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि बाजार के उतार-चढ़ाव का इस पर कोई असर नहीं पड़ता। निवेशक को पहले दिन से ही पता होता है कि मैच्योरिटी पर कितनी रकम मिलेगी। 5 साल की टैक्स सेविंग एफडी पर आयकर की धारा 80सी के तहत 1.5 लाख रुपये तक की टैक्स छूट भी मिलती है। वहीं वरिष्ठ नागरिकों को सामान्य ग्राहकों की तुलना में अधिक ब्याज दर दी जाती है। यही वजह है कि सुरक्षित निवेश चाहने वालों के लिए एफडी आज भी पहली पसंद बनी हुई है।

2. पब्लिक प्रोविडेंट फंड

अगर आपका लक्ष्य बच्चों की पढ़ाई, शादी या रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड तैयार करना है, तो पीपीएफ शानदार विकल्प माना जाता है। यह सरकार समर्थित योजना है, इसलिए इसमें पैसा पूरी तरह सुरक्षित रहता है। पीपीएफ की अवधि 15 साल होती है, लेकिन जरूरत पड़ने पर इसे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। इसकी सबसे खास बात यह है कि इसमें मिलने वाला ब्याज, निवेश और मैच्योरिटी राशि तीनों टैक्स फ्री होते हैं। लंबी अवधि में कंपाउंडिंग का फायदा मिलने से छोटी-छोटी बचत भी बड़ा फंड बन जाती है। यही कारण है कि इसे सबसे भरोसेमंद लॉन्ग टर्म निवेश योजनाओं में गिना जाता है।

3. नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस)

एनपीएसयानी नेशनल पेंशन सिस्टम एक बेहतरीन विकल्प है। इसे पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी (पीएफआरडीए) संचालित करती है। इस योजना में निवेश का एक हिस्सा सरकारी बॉन्ड और कॉर्पोरेट बॉन्ड में लगाया जाता है, जिससे जोखिम कम रहता है। एनपीएस में धारा 80सी के तहत टैक्स छूट मिलती ही है, साथ ही अतिरिक्त 50 हजार की अलग टैक्स छूट का लाभ भी मिलता है।

4. गोल्ड निवेश

भारत में सोना सिर्फ गहना नहीं, बल्कि सुरक्षित निवेश भी माना जाता है। हालांकि अब फिजिकल गोल्ड खरीदने के बजाय लोग एसजीबी और गोल्ड ईटीएफ जैसे विकल्पों की ओर बढ़ रहे हैं। सोने की कीमतें लंबे समय में आमतौर पर बढ़ती रही हैं, इसलिए इसे महंगाई के खिलाफ मजबूत सुरक्षा माना जाता है। खास बात यह है कि एसजीबी में निवेश करने पर सरकार करीब 2.5 प्रतिशत सालाना ब्याज भी देती है। मैच्योरिटी पर टैक्स छूट का फायदा इसे और आकर्षक बनाता है। यही वजह है कि विशेषज्ञ निवेश पोर्टफोलियो में कुछ हिस्सा गोल्ड में रखने की सलाह देते हैं।

धैर्य रखने वालों को ही मिलता है बड़ा मुनाफा, बनाएं बेहतर रणनीति

8 साल से ज्यादा निवेश में नुकसान की संभावना लगभग न के बराबर

लंबी अवधि की एसआईपी बनेगी बाजार की ढाल

सुझाव
बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव हमेशा निवेशकों की चिंता बढ़ाता है। बाजार कभी तेजी से ऊपर जाता है तो कभी अचानक गिरावट निवेशकों का भरोसा डगमगा देती है। खासकर छोटे निवेशक अक्सर इसी डर में रहते हैं कि कहीं उनकी मेहनत की कमाई बाजार की मंदी में डूब न जाए। लेकिन अब एक नई स्टडी ने यह साबित कर दिया है कि अगर निवेशक धैर्य बनाए रखें और लंबी अवधि तक एसआईपी (सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) में निवेश जारी रखें, तो बाजार की वोलैटिलिटी भी उन्हें नुकसान नहीं पहुंचा पाती। हाल ही में सामने आई एक रिसर्च रिपोर्ट में कहा गया है कि इक्विटी एसआईपी में जितनी लंबी अवधि तक निवेश किया जाता है, नुकसान का खतरा उतना ही कम होता जाता है। यहां तक कि 8 साल या उससे अधिक समय तक लगातार निवेश करने वाले निवेशकों को किसी भी अवधि में नुकसान नहीं हुआ। यह रिपोर्ट उन लाखों निवेशकों के लिए राहत भरी खबर है जो हर महीने म्यूचुअल फंड में एसआईपी के जरिए निवेश करते हैं।

15 साल की एसआईपी में रिटर्न ज्यादा स्थिर और भरोसेमंद

विशेषज्ञ बोले-कम से कम एक दशक तक रखें निवेश

युवाओं के लिए छोटी रकम से बड़ा फंड बनाने का आसान तरीका

30 साल के आंकड़ों से निकला निष्कर्ष

अगस्त 1996 से अप्रैल 2026 तक के सेंसेक्स टीआरआई के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। इसमें अलग-अलग अवधियों की एसआईपी के रिटर्न को देखा गया। अध्ययन का मकसद यह समझना था कि समय बढ़ने के साथ निवेशकों का जोखिम किस तरह कम होता है। रिपोर्ट में पाया गया कि कम अवधि की एसआईपी में रिटर्न काफी अस्थिर रहे। तीन साल की अवधि में निवेशकों को जहां एक ओर 55.6 प्रतिशत तक का शानदार रिटर्न मिला, वहीं दूसरी ओर कुछ निवेशकों को 24.6 प्रतिशत तक का नुकसान भी उठाना पड़ा। इसका मतलब साफ है कि कम समय में बाजार की चाल निवेशकों को बड़ा फायदा भी दे सकती है और भारी नुकसान भी। लेकिन जैसे-जैसे निवेश की अवधि बढ़ती गई, जोखिम घटता गया। 8 साल या उससे ज्यादा की अवधि में किए गए किसी भी एसआईपी निवेश में नुकसान दर्ज नहीं हुआ।

क्यों असरदार लंबी अवधि की एसआईपी

विशेषज्ञों के मुताबिक, एसआईपी का सबसे बड़ा फायदा "रुपी कॉस्ट एवरेजिंग" होता है। जब बाजार नीचे होता है, तब निवेशक को कम कीमत पर ज्यादा यूनिट मिलती हैं और जब बाजार ऊपर होता है, तब कम यूनिट मिलती हैं। लंबे समय में यह औसत निवेश लागत को संतुलित कर देता है। इसके अलावा लंबी अवधि में बाजार की गिरावट का असर धीरे-धीरे खत्म हो जाता है। शेयर बाजार भले ही कुछ महीनों या वर्षों तक कमजोर रहे, लेकिन ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो लंबे समय में बाजार ने हमेशा रिकवरी की है। यही कारण है कि धैर्य रखने वाले निवेशकों को बेहतर रिटर्न मिलता है। रिपोर्ट के अनुसार 15 साल की एसआईपी में रिटर्न का दायरा काफी सीमित हो गया। यहां रिटर्न 7.3 प्रतिशत से 18.2 प्रतिशत के बीच रहा। इसका मतलब यह है कि लंबी अवधि में निवेशकों को अपेक्षाकृत स्थिर और भरोसेमंद रिटर्न मिलता है।

दस साल तक निवेश बनाए रखें

एसआईपी का असली फायदा तभी मिलता है जब निवेशक लंबे समय तक निवेश बनाए रखे। उनका मानना है कि कम से कम 10 साल तक निवेश करना चाहिए ताकि बाजार के विभिन्न चक्रों का फायदा मिल सके।

समय के साथ बढ़ी रिटर्न की संभावना

स्टडी में यह भी सामने आया कि निवेश की अवधि बढ़ने के साथ 10 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न मिलने की संभावना भी तेजी से बढ़ती गई। 3 साल की एसआईपी में केवल 67 प्रतिशत मामलों में 10 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न मिला। 10 साल की एसआईपी में यह आंकड़ा 95 प्रतिशत तक पहुंच गया।12 से 15 साल की अवधि में 98 प्रतिशत निवेशकों को 10 प्रतिशत से ज्यादा का रिटर्न मिला। यानी निवेशक जितना अधिक समय तक बाजार में बने रहते हैं, उनके अच्छे रिटर्न पाने की संभावना उतनी ही मजबूत हो जाती है।

एसआईपी बंद करना बड़ी गलती

अक्सर देखा जाता है कि बाजार में गिरावट आते ही निवेशक घबरा जाते हैं और अपनी एसआईपी बंद कर देते हैं। विशेषज्ञ इसे सबसे बड़ी गलती मानते हैं। दरअसल, बाजार में गिरावट के दौरान ही निवेशकों को कम कीमत पर ज्यादा यूनिट मिलती हैं, जो भविष्य में बाजार सुधरने पर बड़ा मुनाफा देती हैं। अगर निवेशक गिरावट के समय निवेश बंद कर देता है, तो वह बाजार की रिकवरी का पूरा फायदा नहीं उठा पाता। इसलिए निवेशकों को बाजार की अस्थायी गिरावट से घबराने के बजाय अनुशासन बनाए रखना चाहिए।

युवा निवेशकों के लिए बड़ा अवसर

विशेषज्ञों का कहना है कि युवाओं के लिए एसआईपी सबसे अच्छा निवेश विकल्प बनकर उभरा है। नौकरी की शुरुआत में छोटी रकम से निवेश शुरू करके लंबे समय में बड़ा फंड तैयार किया जा सकता है। अगर कोई निवेशक 25 साल की उम्र में हर महीने 5 हजार रुपये की एसआईपी शुरू करता है और औसतन 12 प्रतिशत सालाना रिटर्न मिलता है, तो 25-30 साल में करोड़ों रुपये का फंड तैयार हो सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार एसआईपी को दीर्घकालिक संपत्ति निर्माण का सबसे प्रभावी तरीका मानते हैं।

धैर्य ही सफलता की कुंजी

इस पूरी स्टडी का सबसे बड़ा संदेश यही है कि शेयर बाजार में सफलता पाने के लिए धैर्य बेहद जरूरी है। कम समय में बाजार का उतार-चढ़ाव निवेशकों को परेशान कर सकता है, लेकिन लंबी अवधि में यही बाजार संपत्ति बनाने का सबसे मजबूत माध्यम बन जाता है। एसआईपी निवेशकों के लिए सबसे जरूरी बात यह है कि वे नियमित निवेश जारी रखें, बाजार की गिरावट से न डरें और लंबी अवधि का नजरिया अपनाएं। क्योंकि समय के साथ बाजार की अस्थिरता कम होती जाती है और निवेशकों के लिए बेहतर रिटर्न की संभावना मजबूत होती जाती है।

खबर संक्षेप

उकलाना। मेधावी विद्यार्थियों को मिठाई खिलाते स्कूल चेयरमैन।

मेरिट प्राप्त करने वाले छात्रों का किया स्वागत

उकलाना। आरडीएम स्कूल बारहवीं कक्षा की मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का विद्यालय पहुंचने पर स्वागत किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में खुशी और उत्साह का माहौल देखने को मिला। विद्यालय के चेयरमैन डॉ. कृष्ण चंद्र शर्मा ने मेधावी विद्यार्थियों को मिठाई खिलाकर बधाई दी तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने विद्यार्थियों की सफलता को विद्यालय, अभिभावकों और शिक्षकों के सामूहिक प्रयास का परिणाम बताया। डॉ. शर्मा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि मेहनत, अनुशासन और निरंतर प्रयास ही सफलता की असली कुंजी हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन में इसी प्रकार निरंतर आगे बढ़ते रहने तथा विद्यालय और अपने माता-पिता का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित किया।

हेरोइन तस्करी का मुख्य सप्लायर गिरफ्तार

फतेहाबाद। नशा तस्करों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत शहर थाना रतिया पुलिस को सफलता मिली है। पुलिस ने हेरोइन तस्करी के एक मामले में कार्रवाई करते हुए मुख्य सप्लायर को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान गुरजीत सिंह उर्फ गुरजीती निवासी वार्ड नंबर 5, भूना के रूप में हुई है। थाना प्रभारी निरीक्षक पुष्पा ने बताया कि 7 फरवरी को पुलिस टीम ने गश्त के दौरान शिमलापुरी कॉलोनी रोड पर थी इसी दौरान कार्रवाई की गई।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को लेकर बैठक

रतिया। पतंजलि योग समिति की बैठक टिब्बा कालोनी स्थित श्री राम आश्रम शिव मंदिर प्रांगण में हुई। बैठक की अध्यक्षता तहसील प्रभारी देवीलाल चंदौरा ने की, जबकि मुख्यातिथि के तौर पर जिला प्रभारी धर्मवीर ललित उपस्थित रहे। बैठक में 12वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों पर विचार किया और निर्णय लिया कि 20 जून तक योग प्रोटोकॉल प्रशिक्षण शिविर और योग जागरूकता रैली आयोजित की जाएंगी।

छबील लगाकर बुझाई राहगीरों की प्यास

ओढां। राजकीय वरिष्ठ माध्ययमिक विद्यालय मिठड़ी के प्रांगण में ग्रीष्मकालीन अवकाश से पहले ठंडे मीठे पानी की छबील लगाकर सभी छात्र-छात्राओं को ठंडा मीठा जल पिलाया गया। विद्यालय इंचार्ज जितेंद्र गर्ग ने कहा कि इस तपती धूप व लूं में प्रत्येक प्राणी को जल की आवश्यकता पड़ती है और हमें किसी न किसी रूप में जल उपलब्ध करवा कर उनकी प्यास बुझाने का प्रयास करना चाहिए।

नशा मुक्ति टीमों, केयरटेकर्स और पुलिस अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक

नशा उन्मूलन में किसी भी स्तर पर ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी : एसपी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

जिले में संचालित नशा मुक्त अभियान की वास्तविक स्थिति की समीक्षा एवं आगामी रणनीति को और अधिक सख़्त व परिणामकारी बनाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन की अध्यक्षता में पुलिस अधीक्षक कार्यालय में उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रभारी एनडीपीएस सैल सहायकक उप निरीक्षक भूपसिंह, प्रवाचक सहायक उप निरीक्षक बलवंत सिंह, नशा मुक्ति टीम प्रभारी उप निरीक्षक हवा सिंह व जिलेभर से जुड़े 60 से अधिक केयरटेकर्स सहित संबंधित पुलिस अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान पुलिस अधीक्षक ने स्पष्ट और सख़्त शब्दों में कहा कि नशा उन्मूलन अभियान किसी भी स्थिति में औपचारिकता बनकर नहीं रहना चाहिए। उन्होंने निर्देश दिए कि अभियान का प्रभाव प्रत्येक थाना क्षेत्र में धरातल पर स्पष्ट रूप से दिखाई देना चाहिए। किसी भी स्तर पर लापरवाही, निष्क्रियता या ढिलाई को गंभीरता से लिया जाएगा।

हिसार। बैठक को संबोधित करते पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन।

ऑपरेशन जीवन ज्योति से नशा मुक्त हिसार बनाने पर जोर

एसपी सिद्धांत जैन ने कहा कि ऑपरेशन जीवन ज्योति के तहत हिसार को नशा मुक्त बनाने के लिए यह टीम नशा ग्रस्त व्यक्तियों से सीधे संपर्क स्थापित कर उनकी काउंसलिंग करेगी तथा नशा छोड़ने और पुनर्वास की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाएगी। पुलिस अधीक्षक ने नशा तस्करी के विरुद्ध निरंतर सख़्त कार्रवाई, नशे के आदी व्यक्तियों की पहचान, उपचार और सामाजिक पुनर्स्थापन की प्रक्रिया को प्राथमिकता के आधार पर लागू करने के निर्देश दिए। साथ ही सभी थाना प्रभारियों को संवेदनशील क्षेत्रों में निगरानी बढ़ाने, नियमित रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने और जनसहयोग को प्रभावी रूप से जोड़ने के आदेश दिए गए। एसपी जैन ने स्पष्ट किया कि नशा मुक्त जिला पुलिस की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है और इस लक्ष्य की प्राप्ति तक अभियान को पूरी सख़्ती और निरंतरता के साथ आगे बढ़ाया जाएगा।

'कॉकरोच जनता पार्टी' के नाम पर चल रहे फर्जी सदस्यता लिंक से रहें सावधान : सिद्धांत जैन

हिसार। देश में इस समय सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहे व्यंगात्मक डिजिटल आंदोलन 'कॉकरोच जनता पार्टी' की लोकप्रियता का फायदा उठाकर साइबर ठगों ने मासूम लोगों, विशेषकर युवाओं को ठगना शुरू कर दिया है।

- जिला पुलिस ने नागरिकों के लिए जारी किया अलर्ट

ऐसे में पुलिस प्रशासन और साइबर सेल द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में आम जनता के लिए एक विशेष सुरक्षा एडवाइजरी (पब्लिक अलर्ट) जारी की गई है। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने कहा कि साइबर अपराधियों द्वारा व्हाट्सएप और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर 'कॉकरोच जनता पार्टी की सदस्यता लें' या 'कॉकरोच जनता पार्टी से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें' जैसे भ्रामक संदेश भेजे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह कोई आधिकारिक लिंक नहीं, बल्कि फिशिंग अटैक है। जैसे ही कोई यूजर इस संदिग्ध लिंक पर क्लिक करता है या फॉर्म भरते समय ओटीपी साझा करता है, उसका मोबाइल फोन हैक हो जाता है। ठग इस हैकिंग के जरिए पीड़ितों के बैंक खाते की जानकारी, व्यक्तिगत डेटा और पासवर्ड चुरा रहे हैं, जिससे उनके खातों से पैसे उड़ाए जा रहे हैं या उनके नाम पर फर्जी लोन लिए जा रहे हैं।

मेहनत से मिली सफलता की खुशी हो जाती है दोगुना : राठी

बरवाला। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन प्राप्त विद्यार्थियों को सम्मानित करते प्राचार्या व अन्य।

- सरकारी स्कूल सरसौद बिच्छपडी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन प्राप्त छात्रों को किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बरवाला

गांव सरसौद बिच्छपडी में स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में बोर्ड की परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन प्राप्त छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। इस समारोह में स्कूल वेलफेयर कमेटी और विद्यालय प्रबंधन समिति तथा स्कूल की प्रधानाचार्या सुमन राठी द्वारा बोर्ड मेरिट और जिला मेरिट प्राप्त छात्र-छात्राओं को मेडल व पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्या सुमन राठी ने अपने संबोधन में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन प्राप्त छात्र छात्राओं की मुक्त कंठ से सराहना की और कहा कि मेहनत ही सफलता की कुंजी है और मेहनत से ही कठिन से कठिन काम आसान हो जाता है तथा मेहनत से मिली सफलता की खुशी भी दोगुना हो जाती है। इस अवसर पर एसएमसी प्रधान रोशनी देवी, चंद्रभान, धूप सिंह, फुल कुमार, रामफल, बलिया राम, अजय कुमार, राजेश कुमार, रामबीर व सोना देवी समेत स्कूल स्टाफ के समस्त सदस्यगण और अभिभावकगण मौजूद रहे।

युवाओं के सपनों की हत्या से पैदा हुई कॉकरोच पार्टी

हांसी। प्रदेश कांग्रेस में संगठन सृजन की एडिशनल ऑब्जर्वर एवं भगत धन्ना सेवा समिति की अध्यक्ष गायत्री देवी ने केंद्र और प्रदेश की सत्तारूढ़ भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि युवाओं के भविष्य के साथ लगातार किए जा रहे खिलवाड़, बार-बार हो रहे पेपर लीक, बढ़ती बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और गुंडागर्दी की घटनाओं ने ही प्रदेश में कॉकरोच पार्टी जैसी परिस्थितियों को जन्म दिया है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार कॉकरोच अंधेरे और गंदगी में पनपता है, उसी प्रकार यह राजनीति भी पेपर लीक, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और जनता के भीतर बढ़ते असंतोष की उपज है। पिछले कई वर्षों में युवाओं के सपनों को योजनाबद्ध तरीके से कुचला गया है। नीट, यूजीसी-नेट, पुलिस भर्ती और एचएसएससी जैसी महत्वपूर्ण परीक्षाओं में बार-बार पेपर लीक होने से लाखों युवाओं का भविष्य दांव पर लगा, लेकिन सरकार व्यवस्था सुधारने के बजाय छात्रों पर लाठीचार्ज कर दमनकारी रवैया अपनाती रही।

उकलाना। छात्रा आरजू को सम्मानित करते आयोजक।

कला-विज्ञान प्रतियोगिता में आरजू प्रथम

उकलाना। आरडीएम सरस्वती पब्लिक स्कूल की 12वीं कक्षा की प्रतिभाशाली छात्रा आरजू ने एक बार फिर विद्यालय का नाम रोशन किया है। पंचायत भवन बूढ़ा खेड़ा में आयोजित कला-विज्ञान प्रतियोगिता में आरजू ने प्रथम स्थान प्राप्त कर शानदार उपलब्धि हासिल की। इस प्रतियोगिता में क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया, जहां आरजू ने अपनी उत्कृष्ट कला प्रतिभा और रचनात्मक प्रस्तुति से निर्णायकों को प्रभावित किया। उनकी बेहतरीन प्रस्तुति को प्रतियोगिता में विशेष सराहना मिली। विद्यालय परिवार में इस उपलब्धि को लेकर खुशी का माहौल है। विद्यालय प्रबंधन एवं शिक्षकों ने आरजू को बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय प्रबंधन ने विश्वास जताया कि आरजू भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन करती रहेगी।

नीट पेपर लीक, महंगाई और बेरोजगारी से युवा परेशान : चौहान

हिसार। इनेलो युवा नेता एवं पूर्व नगर निगम पार्षद एडवोकेट मान सिंह चौहान ने देश में लगातार बढ़ रही महंगाई, बेरोजगारी, पेट्रोल-डीजल के बढ़ते दाम तथा नीट पेपर लीक जैसे मामलों को लेकर केंद्र और राज्य की भाजपा सरकार की आलोचना की है। उन्होंने कहा कि आज देश का युवा अपने भविष्य को लेकर चिंतित है, लेकिन सरकार युवाओं की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने में लगी हुई है। चौहान ने कहा कि नीट जैसी महत्वपूर्ण परीक्षा का पेपर लीक होना लाखों मेहनती विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों के विश्वास पर बड़ा आघात है। युवा दिन-रात मेहनत करके परीक्षाओं की तैयारी करते हैं, लेकिन पेपर लीक जैसी घटनाएं उनकी मेहनत पर पानी फेर देती हैं।

काजला खाप ने दुराचार और नशे पर जताई गंभीर चिंता

- नशे के खिलाफ खाप जन-जागरण अभियान चलाएगी राष्ट्रीय काजला खाप
- खाप ने सरकार से की ठोस कदम उठाने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार। काजला खाप की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में उपस्थित पदाधिकारी।

राष्ट्रीय काजला खाप ने विद्यालयों व शिक्षण संस्थानों में छात्राओं के यौन शोषण व दुराचार के बढ़ते मामलों पर गहरी चिंता जताई है। खाप ने इनकी रोकथाम के लिए सरकार से तुरंत आवश्यक कदम उठाने की मांग की है। यहां की जाट धर्मशाला में आयोजित खाप की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में यह मुद्दा प्रमुखता से उठा। बैठक में चेताया गया कि यदि इस घिनौने कार्य पर रोक नहीं लगाई गई तो आने वाले समय में इसके भयंकर परिणाम सामने आ सकते हैं। बैठक की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष कैप्टन रामपाल काजला ने की, जबकि राष्ट्रीय संरक्षक धर्मबीर काजला मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। मंच संचालन राजस्थान निवासी राष्ट्रीय प्रवक्ता महेंद्र काजला ने किया। खाप ने युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति के लिए बेरोजगारी को बड़ा कारण बताया। सरकार से मांग की गई कि चीन की तर्ज पर घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देकर रोजगार के अवसर पैदा किए जाएं। साथ ही निर्णय लिया गया कि नशे के खिलाफ खाप जन-जागरण अभियान चलाएगी। सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव में निर्णय लिया गया कि खाप का चबूतरा हरियाणा में किसी उपयुक्त स्थान पर बनाया जाएगा। इसके लिए राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष मांगे राम काजला की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया गया। खाप के मार्च 2027 में होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन का स्थान तय करने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष को अधिकृत किया गया। बैठक में अर्जुन अवार्ड के लिए चयनित होने पर खाप की बेटी कबड्डी प्लेयर पूजा काजला को बधाई दी गई। उन्हें सम्मानित करने का निर्णय भी लिया गया।

सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार

बैठक में राजमल काजल, विजयपाल काजला, प्रमेंद्र काजला, अत्तरसिंह काजला, मानसिंह काजला व राजबीर काजल ने बढ़ते दुराचार व नशाखोरी पर चिंता जताई। राष्ट्रीय अध्यक्ष कैप्टन रामपाल काजला ने आह्वान किया कि सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए मिलजुल कर प्रयास करें।

बाढ़ के स्थायी समाधान और नुकसान की भरपाई के लिए बधावड़ में महापंचायत 26 को

- महापंचायत की तैयारियों को लेकर आधा दर्जन से अधिक गांवों में की जनसभाएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बरवाला

बरवाला। बैठक को संबोधित करते जिला सचिव रोहतास राजली।

अखिल भारतीय किसान सभा के जिला सचिव सरबत सिंह पूनिया ने कहा कि बाढ़ से हुए नुकसान के स्थाई समाधान और मकानों, फसलों व अन्य संसाधनों के नुकसान की भरपाई की मांग को लेकर 26 मई को गांव बधावड़ में किसान-मजदूर महापंचायत का आयोजन करेंगे।

इस महापंचायत की तैयारियों के तहत शनिवार को बधावड़, पंघाल, जेवरा, सरसोद, बिचपड़ी, बर्की खेड़ी, बहबलपुर, बाड्डो पट्टी समेत 8-9 गांवों में जनसभाएं की गईं। बैठकों को संबोधित करते हुए नेताओं ने कहा कि गत साल आई बाढ़ के कारण पूरे इलाके में भारी तबाही हुई थी। गांवों की निचली बस्तियां और गरीब कॉलोनियां पूरी तरह नष्ट हो गईं। सैकड़ों मकान गिर गए, दीवारों में दरारें आ गईं। हजारों एकड़ में खड़ी फसलें बर्बाद हो गईं। खेतों में रखे ट्यूबवेल, कृषि उपकरण, चारा और घरों का सामान पानी में बह गया। इतनी बड़ी तबाही के बावजूद सरकार द्वारा अब तक किसी भी प्रभावित परिवार को मुआवजा नहीं दिया गया है। न सही तरीके से गिरदावरी कराई गई, न नुकसान का आंकलन हुआ। पीड़ित परिवार आज भी टूटी छतों और खुले आसमान के नीचे रहने को मजबूर हैं।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर अखिल भारतीय किसान सभा के जिला सचिव शर्बत पूनिया, अखिल भारतीय खेत एवं ग्रामीण मजदूर यूनियन के जिला सचिव रोहतास राजली, अखिल भारतीय किसान सभा के तहसील सचिव मा. कर्मवीर, सचिव सत्यवान रेड्डू, श्रवण ढाणी गारण, रमेश बुरा, चंद्र, जीवन सिंह, जितेंद्र बधावड़, बलजीत सिहाग, अभेराम जांगड़ा, धर्मबीर वर्मा व फूल कुमार बहबलपुरिया समेत सैकड़ों किसान-मजदूर मौजूद रहे।

विकास परियोजना के निर्माण कार्य का विधायक ने नारियल फोड़ किया शुभारंभ

- अधिकारी क्षेत्र की समस्याओं का करें समाधान : भयाना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

शहर के वार्ड नंबर 22 में आधारभूत सुविधाओं को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए विधायक विनोद भयाना ने शनिवार को लगभग 22 लाख रुपये की लागत से बनने वाली गली के निर्माण कार्य का नारियल तोड़कर विधिवत शुभारंभ किया। यह गली सुरेंद्र राजपाल के घर से लेकर मुख्य सड़क तक बनाई जाएगी, जिससे क्षेत्रवासियों को कई दिनों से चली आ रही आवागमन संबंधी परेशानियों से राहत मिलेगी।

हांसी। विकास परियोजनाओं का शुभारंभ करते विधायक विनोद भयाना।

गुणवत्ता से विकास कार्य पूरे हों

विधायक विनोद भयाना ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार का उद्देश्य हर गांव व शहर के प्रत्येक वार्ड तक समान रूप से विकास पहुंचाना है। विधायक ने संबंधित विभाग के अधिकारियों एवं निर्माण एजेंसी को स्पष्ट निर्देश देते हुए कहा कि निर्माण कार्यों में केवल उच्च गुणवत्ता की सामग्री का ही प्रयोग किया जाए और निर्धारित समय सीमा के भीतर कार्य पूर्ण करवाया जाए। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की लापरवाही या घटिया निर्माण सामग्री को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

धरने पर बैठे रोडवेज कर्मियों की मांगें जायज : किरमारा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

इनेलो के प्रदेश सचिव एवं वरिष्ठ कर्मचारी नेता रहे दलबीर किरमारा ने रोडवेज में पिछले लंबे समय से धरने पर बैठे कर्मचारियों का समर्थन करते हुए उनकी मांगों को शीघ्र पूरा किए जाने की मांग की है। इसके साथ ही उन्होंने इन मांगों को लटकाने के जिम्मेवार अधिकारियों पर कार्रवाई करने की भी मांग उठाई है। दलबीर किरमारा ने कहा कि रोडवेज में पिछले कई दिनों से कर्मचारी सांझा संघर्ष समिति के बैनर तले धरने पर बैठे हैं। ये कर्मचारी जो मांगे उठा रहे हैं, वो मांगे कोई एक या दो दिन या एक-दो महीने से लंबित नहीं है बल्कि साढ़े तीन साल से लंबित है। ये कर्मचारी टीए, मेडिकल बिल, एलटीसी, रात्रि भत्ता व अन्य मांगों को पूरा करने की मांग पर आंदोलन कर रहे हैं, जो विभागीय अधिकारियों के लिए शर्मनाक है क्योंकि कर्मचारी कोई गलत मांग नहीं कर रहा बल्कि उन्हें अपने हक के लिए लड़ना पड़ रहा है। यदि ये हक उन्हें समय पर दे दिए जाते तो इस आंदोलन की भी नौबत नहीं आती।

तालाबों के पानी की होगी निःशुल्क वैज्ञानिक जांच, मौके पर मिलेगी रिपोर्ट

मत्स्य विभाग को मिली आधुनिक मोबाइल वाटर टेस्टिंग वैन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

जिला मत्स्य विभाग को एक आधुनिक मोबाइल वाटर टेस्टिंग वैन प्राप्त हुई है। नलवा के विधायक रणधीर पनिहार ने गांव पनिहार चक में हरी झंडी दिखाकर इस वैन को रवाना किया। यह वैन जिले के मत्स्य किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण सुविधा साबित होगी, जिसके माध्यम से उनके तालाबों के पानी की गुणवत्ता की निशुल्क जांच की जाएगी। विधायक रणधीर पनिहार ने कहा कि यह मोबाइल वैन मत्स्य किसानों के लिए बेहद उपयोगी साबित होगी और इससे जिले में मत्स्य उत्पादन को नई गति मिलेगी। इसके साथ ही उन्होंने मत्स्य किसानों से आधुनिक तकनीकों को अपनाने और विभाग द्वारा दी जा रही सुविधाओं का अधिकतम लाभ उठाने का आह्वान किया।

हिसार। वैन को झंडी दिखाकर रवाना करते विधायक रणधीर पनिहार।

मोबाइल वैन बढ़ाएगी मत्स्य उत्पादन

इस मोबाइल वाटर टेस्टिंग वैन के जरिए मत्स्य विभाग की टीम सीधे मत्स्य किसानों के तालाबों तक पहुंचकर पानी के विभिन्न मानकों की वैज्ञानिक जांच करेगी तथा मौके पर ही पानी की गुणवत्ता संबंधी रिपोर्ट उपलब्ध कराएगी। इससे किसानों को अपने तालाब के पानी की वास्तविक स्थिति की तत्काल जानकारी मिल सकेगी और वे वैज्ञानिक सलाह के अनुरूप उचित कदम उठाकर मत्स्य उत्पादन को बेहतर बना सकेंगे। इस अवसर पर संयुक्त निदेशक, मत्स्य विभाग हरियाणा संदीप बेनीवाल, जिला मत्स्य अधिकारी भीमसैन बेनीवाल, मत्स्य अधिकारी विजेन्द्र सूरा,धीरणवास सरपंच रामबीर, संजय श्योराण, कैमरी सरपंच ओम प्रकाश, भेरियां सरपंच सरजीत सरदार, इकबाल, सुभाष पनिहार, डॉ सुनील देवां सहित अनेक प्रगतिशील मत्स्य किसान उपस्थित रहे।

सूचना

मैं, औमप्रकाश पुत्र लालचन्द पुत्र शिवलाल निवासी सारंगपुर, तहसील आदमपुर, जिला हिसार बयान करता हूं कि मेरे पुत्र राजू व पंकज तथा पुत्रवधु मुस्कान पत्नी राजू मेरे कहने-सुनने से बाहर हैं। इसलिये मैं इनको अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूं। इनसे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

खबर संक्षेप

बरवाला में तीन घंटे सप्लाई रहेगी बाधित

बरवाला। 33 केवी सबस्टेशन बरवाला में आवश्यक जनरल मेंटेनेंस कार्य के चलते 11 के.वी. फीडरों बरवाला अर्बन, एमसी.अर्बन, हांसी रोड अर्बन, मंडी अर्बन, डिस्पोजल पंप, लक्ष्मी विहार अर्बन, ढाड आरडीएस, बधावड आरडीएस, मतलोढा एपी फीडर, गुराना ए.पी.फीडर, खरकपुनिया ए. पी. ओल्ड वाटर वकर्स अर्बन फीडर व कोर्ट अर्बन फीडर की बिजली सप्लाई 24 मई को 3 घंटे प्रातः 7 बजे से 10 बजे तक बाधित रहेगी। बिजली निगम के एसडीओ ने बताया कि अगर मौसम खराब हुआ तो मुरम्मत का कार्य स्थगित किया जा सकता है।

सकल जैन समाज का मौन जुलूस 25 को

हिसार। रीवा में दो दिगम्बर जैन आर्यिकाओं के साथ हुई अत्यंत दुःखद सड़क दुर्घटना एवं देशभर में जैन मुनियों, आर्यिकाओं तथा साधु-साध्वियों की लगातार बढ़ती असुरक्षा के विरोध स्वरूप, संपूर्ण भारतवर्ष में 25 मई को विशाल मौन जुलूस एवं शांतिपूर्ण प्रदर्शन होगा। इसी क्रम में हिसार सकल जैन समाज द्वारा भी प्रातः 8 बजे श्री दिगम्बर जैन मंदिर, नागोरी गेट से मौन जुलूस निकाला जाएगा, जो पारिजात चौक होते हुए पुनः मंदिर परिसर तक पहुंचेगा। श्री दिगम्बर जैन पंचायत के प्रधान नवीन जैन ने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य जैन संतों की सुरक्षा सुनिश्चित करने, रीवा दुर्घटना की निष्पक्ष जांच कराने तथा समाज में एकता एवं जागरूकता का संदेश देना है। समाज के सभी प्रतिष्ठानों से भी अनुरोध किया गया है कि वे अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर इस शांतिपूर्ण प्रदर्शन में सहयोग प्रदान करें।

निःशुल्क नेत्र ऑपरेशन शिविर आज

हिसार। दिव्यांग पुनर्वास केंद्र में दी जा रही निशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं से प्रेरित होकर समाजसेवी बंटी सैन ने अपनी पत्नी स्वर्गीय कुसुम सैन की स्मृति में निशुल्क नेत्र ऑपरेशन शिविर लगवाने का निर्णय लिया है। बंटी सैन की पत्नी कुसुम सैन की 24 मई को पांचवीं पुण्यतिथि है। उनकी स्मृति में आंखों के सफेद मोतियाबिंद से पीड़ित जरूरतमंद लोगों का निशुल्क ऑपरेशन दिव्यांग केंद्र के अनुभवी व प्रशिक्षित चिकित्सकों द्वारा किया जाएगा। शिविर के उपरांत यथासंभव दवाइयां भी निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएंगी।

सुदर्शन क्रिया फॉलोअप का आयोजन आज

हिसार। आर्ट ऑफ लिविंग हिसार इकाई की ओर से 24 मई को सुबह 6:30 से 8:30 बजे तक साधकों को आध्यात्मिक पथ पर आरूढ़ रखने के लिए परम पूज्य गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी की पवित्र वाणी में दिव्य- सुदर्शन क्रिया फ़ॉलोअप का आयोजन किया जाएगा। स्टेट मीडिया कोऑर्डिनेटर नीरज कुमार गुप्ता ने बताया कि योग, प्राणायाम, सुदर्शन क्रिया तथा गुरु-ज्ञान जैसे दिव्य गुणों से सुसज्जित कल के सत्र दो स्थान-भारत माता मंदिर एवं आर्ट ऑफ लिविंग हैप्पीनेस सेंटर, सेक्टर-14 में आयोजित किये जाएंगे। उन्होंने बताया कि 24 मई को सुबह 6:30 से 8:30 बजे तक साधकों को आध्यात्मिक पथ पर आरूढ़ रखने के लिए परम पूज्य गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी की पवित्र वाणी में दिव्य- सुदर्शन क्रिया फ़ॉलोअप का आयोजन किया जाएगा।

सोमवार की सीटीएम से मिलेंगे सभी पार्षद

चेयरपर्सन के खिलाफ 13 पार्षदों ने डीसी को सौंपा अविश्वास पत्र

सीटीएम से मिलकर गुप्त मतदान की मांग करेंगे और रणनीति भी तैयार की जाएगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौंद

नारनौंद। जिला उपायुक्त राहुल नरवाल से मुलाकात करते हुए पार्षद। *फोटो : हरिभूमि*

नगर पालिका में भाजपा पार्टी की वाइस चेयरपर्सन प्रिया के खिलाफ 13 पार्षदों ने जिला उपायुक्त राहुल नरवाल को अविश्वास पात्र सौंप दिया है। खास बात ये है कि भाजपा की जिला महिला अध्यक्ष एवं पार्षद नीलम जांगड़ा सहित तीन पार्षद भी उनके खिलाफ बताए जा रहे हैं। इस पूरे खेल के पीछे कांग्रेस पार्टी का हाथ बताया जा रहा हैं क्योंकि चेयरमैन और वाइस चेयरपर्सन के दोनों पदों पर भाजपा का कब्जा है। सोमवार पार्षद सीटीएम से मिलकर मतदान की मांग करेंगे और आगे की रणनीति के अनुसार अपनी गोटिया फिट करेंगे।

जानकारी के अनुसार नगर पालिका में दोनों पदों पर भाजपा का कब्जा है। चेयरमैन शमशेर कूकन और वार्ड चार से पार्षद प्रिया को वाइस चेयरपर्सन चुना गया था। वाइस चेयरपर्सन प्रिया की कार्यशैली को लेकर पिछले कुछ दिनों से पार्षद नाखुश नजर आ रहे थे और उनके खिलाफ मोर्चा बंदी करने का प्लान तैयार किया जा रहा था। कुल 16 पार्षदों में से 13 पार्षदों ने उपायुक्त से मिलकर उनके खिलाफ अविश्वास पत्र सौंपा है। सोमवार को खिलाफ पार्षद सीटीएम हांसी से मुलाकात करेंगे। सूचना हैं कि पार्षद गुप्त मतदान करने का प्रस्ताव भी रखेंगे। ऐसे में भाजपा पार्टी की वाइस चेयरपर्सन को हटाकर इस पद पर किस पार्टी का कब्जा होता हैं वे आने वाला समय ही तय करेगा। इस खेल के पीछे कांग्रेस पार्टी बड़ा खेला करने की फिराक में है। कुछ पार्षद कांग्रेस पार्टी में अपनी आस्था रखते हैं ओर वे पार्टी के नेताओं के संपर्क में है।

भाजपा की महिला विंग की जिला अध्यक्ष एवं वार्ड तीन से पार्षद नीलम जांगड़ा, भाजपा आईटी सेल के वार्ड 16 से पार्षद अमित सैनी, पार्षद टेकराम शर्मा, पिंकी लोहान ओर पिंकीपाल भी वाइस चेयरमैन के खिलाफ बताए जा रहे हैं। जेजेपी ओर आम आदमी पार्टी का भी एक एक पार्षद है। कुछ पार्षद भाजपा और कांग्रेस दोनों पार्टियों के नेताओं से अपनी नजदीकी बनाए हुए हैं।

कुछ पार्षद बदनाम करने में लगे : प्रिया

वाइस चेयरपर्सन प्रिया ने बताया कि कुछ पार्षद उनको बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने सभी को साथ लेकर और पूरी ईमानदारी के साथ काम किया है। आगे भी वे सभी के सहयोग से नारनौंद के विकास के लिए काम करती रहेंगी। पार्षदों के सहयोग से ही वह वाइस चेयरमैन बनी थी। अगर पार्षद उनको हटाना चाहते हैं तो उनका स्वागत है। वे किसी की दबाव में आकर काम नहीं करेंगी।

इन पार्षदों ने सौंपा अविश्वास पत्र

पार्षद पिंकी लोहान, नीलम जांगड़ा, सुखबीर सिंह, ज्योति, सोमबीर, सुषमा, राजबीर, टेकराम शर्मा, पिंकी पाल, सत्यवान, सुनीता, मुकेश, अमित सैनी ने अविश्वास पत्र सौंपा। उन्होंने आरोप लगाया कि वाइस चेयरपर्सन प्रिया अपने पद का दुरुपयोग कर विकास कार्यों में बाधा बन रही हैं। पार्षदों का सहयोग न करके उनके विकास कार्यों में रुकावट डालने का काम कर रही हैं।

श्री काली देवी विद्या मंदिर में विद्यार्थी परिषद का गठन, ली पद व गोपनीयता की शपथ

- विद्यालय परिषद के चिराग खट्टर हेड बॉय तथा नैना जांगड़ा बनी हेड गर्ल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

हांसी। विद्यार्थी परिषद के चारों सदनों के नव चयनित सदस्य स्कूल प्राचार्या गीता मेहता के साथ। *फोटो :हरिभूमि*

श्री काली देवी विद्या मंदिर में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए विद्यार्थी परिषद का गठन गरिमामयी एवं भव्य समारोह के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की प्राचार्या गीता मेहता एवं हाउस इंचार्जेस द्वारा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। विद्यार्थी परिषद के गठन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, जिम्मेदारी, टीम भावना तथा संगठनात्मक कौशल जैसे गुणों का विकास करना है, ताकि वे भविष्य में जिम्मेदार एवं आदर्श नागरिक बन सकें। पदभार ग्रहण के उपरांत नवनिर्वाचित विद्यार्थी परिषद के सदस्यों ने विद्यालय बैंड के साथ एक शानदार एवं अनुशासित मार्च पास्ट प्रस्तुत किया। गठित विद्यालय परिषद में चिराग खट्टर को हेड बॉय, नैना जांगड़ा को हेड गर्ल, जीवांश मुंजाल को डिप्टी हेड बॉय, गीतांशी को डिप्टी हेड गर्ल, मीत को स्पोर्ट्स हेड बॉय तथा नव्या को स्पोर्ट्स हेड गर्ल के रूप में जिम्मेदारी सौंपी गई। इसके अतिरिक्त विद्यालय के चारों सदनों ज्योति, शक्ति, कीर्ति एवं प्रगति के लिए सीनियर एवं जूनियर स्तर पर कप्तान एवं उप-कप्तान की नियुक्ति की गई।

रॉयल स्कूल के अलंकरण समारोह में छात्रों ने ली कर्तव्य निर्वहन की शपथ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। स्कूल निदेशिका डॉ. ज्योत्स्ना व सैनिक स्कूल कमांडेंट कर्नल डॉ. डीवी नेहरा के साथ नवचयनित विद्यार्थी।

रॉयल इंटरनेशनल रेजिडेंशियल स्कूल खारा खेड़ी में अलंकरण समारोह का आयोजन बड़े ही धूमधाम के साथ किया गया। समारोह का प्रारंभ सुबह सरस्वती वंदना के साथ किया गया। इसमें स्कूल हेड बॉय, स्कूल हेड गर्ल, खेल कप्तान और चारों सदनों के कप्तान व उप कप्तान मनोनीत किए गए। सर्वप्रथम स्कूल के हेड बॉय के रूप में कक्षा ग्यारहवीं से लोकश और हेड गर्ल के रूप में कक्षा ग्यारहवीं से भाविका का चयन किया गया। इसके पश्चात बोस सदन की कप्तान अक्षरा (कक्षा ग्यारहवीं), उप कप्तान रैन्सी (कक्षा ग्यारहवीं), नेहरू सदन का कप्तान पुनीत (कक्षा ग्यारहवीं), उप कप्तान इकनूर (कक्षा नौवीं), टैगोर सदन की कप्तान नियुष चौधरी (कक्षा नौवीं), उप कप्तान दिशा (कक्षा नौवीं) तथा विवेकानंद सदन का कप्तान राहुल (कक्षा ग्यारहवीं) व उप कप्तान अमन (कक्षा नौवीं) को मनोनीत गया। स्पोर्ट्स कप्तान के रूप में लड़को में खुशवर्धन (कक्षा नौवीं) तथा लड़कियों में समरप्रीत कौर (कक्षा नौवीं) को मनोनीत किया गया। स्कूल निदेशिका डॉ. ज्योत्स्ना और सैनिक स्कूल कमांडेंट कर्नल डॉ. डीवी नेहरा (रिटायर्ड) ने नवनिर्वाचित सदस्यों को सैशे पहनाया तथा बैज लगाया। स्कूल हेड बॉय लोकेश ने सभी नवनिर्वाचित सदस्यों को कर्तव्य निर्वहन की शपथ दिलवाई।

हिसार। लिवर ट्रांसप्लांट प्राप्तकर्ता व उनके डोनर्स के साथ चिकित्सकों की टीम।

एडवांस्ड लिवर केयर पर दिया जोर, डोनर्स सम्मानित

हिसार। लिवर रोगों के बढ़ते मामलों के बीच आकाश हेल्थकेयर, खालसा चूड़ामणि हॉस्पिटल और वेदा हॉस्पिटल ने शहर में एडवांस्ड लिवर ट्रीटमेंट और लिवर ट्रांसप्लांट सेवाओं की उपलब्धता पर जोर दिया। कार्यक्रम के दौरान ऑर्गन डोनेशन के माध्यम से लोगों की जान बचाने वाले लिवर डोनर्स को भी सम्मानित किया गया। आयोजित कार्यक्रम में लिवर डिजीज एवं ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ डॉ. सौरभ सिंघल, सीनियर कंसल्टेंट और डायरेक्टर सेंटर फॉर लिवर जीआई डिजीज एंड ट्रांसप्लांटेशन आकाश हेल्थकेयर, गैस्ट्रोएंटरोलॉजिस्ट डॉ. अभिमन्यु नेहरा, एमडी गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और हेपेटोलॉजी, और डॉ. खुशविंदर शर्मा गैस्ट्रोएंटरोलॉजिस्ट, दोनों खालसा चूड़ामणि मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल हिसार के साथ, पिछले एक साल से आकाश हेल्थकेयर, खालसा हॉस्पिटल और वेदा हॉस्पिटल द्वारा संयुक्त रूप से संचालित जॉइंट लिवर ट्रांसप्लांट क्लिनिक की जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि लिवर डोनेशन में मामलों में पुरुष के मुकाबले महिला आगे हैं।

नेटबॉल में टैगोर हाउस प्रथम और भगत सिंह हाउस रहा द्वितीय

- होली चाइल्ड में इंटर हाउस नेटबॉल प्रतियोगिता आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी।

होली चाइल्ड सीनियर सेकेंडरी स्कूल में विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इंटर हाउस नेटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विद्यालय के विभिन्न हाउसों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए खेल भावना, अनुशासन और टीमवर्क का शानदार प्रदर्शन किया। होली चाइल्ड वार्षिक खेल कैलेंडर के अनुसार इस प्रतियोगिता का आयोजन अलग-अलग आयु वर्गों में छात्र एवं छात्राओं के लिए किया गया, जिसमें कक्षा तीसरी से बारहवीं तक के विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा दिखाई। कक्षा तीसरी से आठवीं तक की छात्राओं की प्रतियोगिता में टैगोर हाउस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि भगत सिंह हाउस द्वितीय एवं टेरेसा हाउस तृतीय स्थान पर रहा। वहीं बालक वर्ग में भगत सिंह हाउस ने प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि टेरेसा हाउस ने द्वितीय तथा कलाम हाउस ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा नौवीं से बारहवीं छात्रा वर्ग में टैगोर एवं भगत सिंह हाउस ने संयुक्त रूप से प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि कलाम एवं टेरेसा हाउस संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान पर रहे।

हांसी। कार्यशाला में उपस्थित मुख्य प्रशिक्षक डॉ. बंता सिंह गवर्नमेंट कॉलेज, हांसी से मुख्य प्रशिक्षक। *फोटो :हरिभूमि*

एआई व कंप्यूटेशनल थिंकिंग भविष्य की अनिवार्यता

हांसी। बाबा बंदा बहादुर पब्लिक स्कूल में फाउंडेशन ऑफ कंप्यूटेशनल थिंकिंग एंड एआई रेडीनेस विषय पर एक विशेष शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस महत्वपूर्ण सत्र में डॉ. बंता सिंह गवर्नमेंट कॉलेज, हांसी से मुख्य प्रशिक्षक के रूप में उपस्थित रहे, जिन्होंने अपने तकनीकी ज्ञान और अनुभवों से शिक्षकों का मार्गदर्शन किया। मुख्य वक्ता ने अपने संबोधन में कहा कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कंप्यूटेशनल थिंकिंग केवल एक विषय नहीं, बल्कि भविष्य की अनिवार्य आवश्यकता बन चुके हैं। उन्होंने शिक्षकों को समस्या-समाधान' के सभी चरणों को बेहद सरल और व्यावहारिक उदाहरणों के साथ समझाया। विद्यालय की प्रधानाचार्या लवली चावला, प्रशासक प्रवीण चुघ ने मुख्य रिसोर्स पर्सन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के उच्च स्तरीय प्रशिक्षण से शिक्षकों के शैक्षणिक कौशल में अभूतपूर्व वृद्धि होगी, जिसका सीधा लाभ विद्यार्थियों को मिलेगा।

ओएसजीयू ने मेधावी छात्रों को पुरस्कार देकर किया सम्मानित

- शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देने में ओएसजीयू का महत्वपूर्ण प्रयास
- विवि के चांसलर डॉ. पुनीत गोयल और प्रो चांसलर डॉ. पूनम. गोयल ने विद्यार्थियों को दी बधाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित करते अतिथिगण। *फोटो :हरिभूमि*

ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय और गरिमा फाउंडेशन के सौजन्य से विश्वविद्यालय प्रांगण में शनिवार को प्रतिभा सम्मान समारोह एवं स्कॉलरशिप टेस्ट का आयोजन किया गया। समारोह में इस वर्ष 12वीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के चांसलर डॉ. पुनीत गोयल और प्रो चांसलर डॉ. पूनम. गोयल ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मेधावी विद्यार्थियों को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य कि कामना की। कार्यक्रम के दौरान हिसार, हांसी, फतेहाबाद व आस पास के क्षेत्रों से लगभग 521 विद्यार्थियो ने हिस्सा लिया। समारोह में ग्रुप सीओओ एंड प्रोवोस्ट डॉ. अजय कुमार पोद्दार (ओएसजीयू) ने उपस्थित होकर अपने जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए विद्यार्थियों को प्रेरित किया।

हिसार। शिक्षकों को संबोधित करते हुए वरिष्ठ प्रोफेशनल एवं मनोवैज्ञानिक राजपाल सिंह बसानीवाल। *फोटो :हरिभूमि*

तनाव प्रबंधन विषय पर कार्यशाला का आयोजन

हिसार। दिव्यांग एकाधिकार पुनर्वास ट्रस्ट के तत्वावधान में एक निजी स्कूल में शिक्षकों के मानसिक, स्वास्थ्य एवं तनाव प्रबंधन विषय पर एक विस्तृत एवं प्रभावशाली कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य शिक्षकों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना, तनाव प्रबंधन की प्रभावी तकनीकों से परिचित कराना तथा उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं व्यावसायिक जीवन में संतुलन स्थापित करने के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था। कार्यक्रम में वरिष्ठ प्रोफेशनल एवं मनोवैज्ञानिक राजपाल सिंह बासनीवाल तथा डॉ. शिवांशी तोमर ने मुख्य विशेषज्ञ के रूप में सहभागिता करते हुए शिक्षकों को मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न आयामों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में शिक्षकों पर बढ़ते कार्यभार, पारिवारिक जिम्मेदारियों एवं सामाजिक अपेक्षाओं के कारण मानसिक तनाव एक गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। ऐसे में मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखना न केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। कार्यशाला के दौरान तनाव के कारणों के बारे में विस्तार से बताया।

लक्ष्मीबाई कॉलेज में भारत रेसलिंग शूटिंग हॉल का हुआ उद्घाटन

- मेधावी छात्र व अभिभावक सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। नवनिर्मित रेसलिंग हॉल का उद्घाटन करते मुख्य अतिथि जगमोहन मित्तल व अन्य।

महारानी लक्ष्मीबाई कालेज में भारत रेसलिंग शूटिंग हॉल का उद्घाटन हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वैश्य एजुकेशन सोसायटी रोहतक के पूर्व अध्यक्ष जगमोहन मित्तल उपस्थित रहे, जबकि अध्यक्षता हिसार के सिटी मजिस्ट्रेट सुभाष चंद्र ने की। इस मौके पर दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ. अशोक मित्तल की शैक्षणिक सेवाओं को सम्मानित करते हुए नव-निर्मित रेसलिंग हॉल उनके नाम समर्पित किया गया। प्रसिद्ध रेसलर गुरदीप और अमृत पाल के निर्देशन में विद्यार्थियों ने कुश्ती के ग़जब दांव पेंच दिखाए। इससे पूर्व डॉ. शमीम शर्मा ने सभी आगंतुकों का अभिनंदन किया। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन की ओर से महारानी लक्ष्मी बाई त्रिलोक चंद स्कूल के शूटिंग प्रशिक्षक कपिल के निर्देशन में अभिभावकों के लिए विशेष पैरेंट्स शूटिंग चैलेंज का आयोजन भी किया गया, जिसमें करीब सौ अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

लंबित मामलों का शीघ्र निपटारा सुनिश्चित करें

हांसी। उपायुक्त राहुल नरवाल ने राजस्व विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि निशानदेही से संबंधित जितने भी आवेदन लंबित पड़े हैं, उनका प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र निपटारा सुनिश्चित किया जाए ताकि आमजन को समय पर राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि राजस्व कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही या अनावश्यक देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उपायुक्त राहुल नरवाल ने कहा कि भूमि विवादों और सीमांकन से जुड़े मामलों में निशानदेही की प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। ऐसे मामलों के लंबित रहने से आम नागरिकों को परेशानी का सामना करना पड़ता है और विवाद बढ़ने की संभावना भी बनी रहती है। इसलिए सभी तहसीलदार, नायब तहसीलदार एवं संबंधित राजस्व अधिकारी लंबित मामलों की समीक्षा कर उनका समाधान करें।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 7988727916, 9315429403, 9253681005

युगद्रष्टा महायोगी हैं गुरु गोरखनाथ

हांसी। गुरु गोरखनाथ स्मृति दिवस के अवसर पर भारतीय संत परंपरा और योग दर्शन को लेकर विशेष विचार व्यक्त करते हुए अखिल भारतवर्षीय योगीनाथ महासभा के राष्ट्रीय संयोजक, साधक, इतिहासकार एवं शोधकर्ता डॉ. योगी अनूप नाथ ने कहा कि गुरु गोरखनाथ जी केवल एक योगी नहीं, बल्कि भारतीय चेतना के ऐसे दार्शनिक महापुरुष थे जिन्होंने मनुष्य को आत्मबोध, साधना और जीवन के वास्तविक सत्य का मार्ग दिखाया। उन्होंने कहा कि गुरु गोरखनाथ जी का दर्शन बाहरी आडंबरों से मुक्त होकर भीतर की चेतना को जागृत करने का संदेश देता है। उनका योग केवल शरीर की क्रियाओं तक सीमित नहीं था।

3500 सीटों पर पांच हजार से अधिक आवेदन आए

गुजवि में दाखिले के लिए जबरदस्त रुझान

यूजी-पीजी पाठ्यक्रमों की बढ़ रही मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

प्रो. नरसी राम बिश्नोई, कुलपति।

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विवि में नियमित कोर्सों के लिए आवेदन प्रक्रिया जारी है। दाखिलों को लेकर विद्यार्थियों में जबरदस्त उत्साह है। अंडरग्रेजुएट प्रोग्राम्स में विद्यार्थियों की रूचि में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय को शनिवार सुबह तक 3500 सीटों पर दाखिले के लिए पांच हजार से अधिक आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। आवेदन करने की अंतिम तिथि एक जून है। विवि के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए विश्वविद्यालय को अब तक पोस्टग्रेजुएट कोर्सों में 1150 से अधिक तथा अंडरग्रेजुएट कोर्सों में 3800 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं। डिप्लोमा कोर्सों में भी भारी रुझान है। विशेष रूप से दिल्ली-एनसीआर, चंडीगढ़, जयपुर तथा अन्य राज्यों के विद्यार्थियों का भी गुजविप्रौवि के प्रति रूझान तेजी से बढ़ा है। विश्वविद्यालय के कोर्स उद्योगोन्मुखी व रोजगारपरक हैं। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि विश्वविद्यालय का आधारभूत ढांचा विश्वस्तरीय है। अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं स्थापित है। 360 डिग्री वर्चुअल टूर से विद्यार्थी घर बैठे ही विश्वविद्यालय के हर विभाग और सुविधा की पूरी जानकारी के सकते हैं।

आवेदन करने की अंतिम तिथि एक जून

दाखिलों की अंतिम तिथि एक जून है। प्रवेश से संबंधित विस्तृत जानकारी जैसे सीटों की संख्या, पात्रता मानदंड, प्रवेश प्रक्रिया, प्रवेश परीक्षा (जहां लागू हो), काउंसलिंग शेड्यूल एवं शुल्क संरचना आदि विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध प्रॉस्पेक्टस 2026-27 में उपलब्ध है। सभी अभ्यर्थियों को सलाह दी जाती है कि वे विश्वविद्यालय की वेबसाइट नियमित रूप से देखते रहें। बी.टेक, बी.फार्मा एवं संबंधित लेटरल एंट्री कार्यक्रमों में प्रवेश हरियाणा स्टेट टेक्निकल एजुकेशन सोसायटी (एचएसटीईएस), पंचकूला के माध्यम से ऑनलाइन काउंसलिंग द्वारा किया जाएगा।

एचपीवी टीकाकरण के लाभ बताए

हांसी। मानवती कन्या हाई स्कूल में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के अंतर्गत एचपीवी टीकाकरण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किशोरियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाव के प्रति जागरूक करना तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ समाज में चेतना फैलाना रहा। इस दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा 14 से 15 वर्ष से कम आयु वर्ग की बालिकाओं को एचपीवी वैक्सीनेशन के महत्व के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। छात्राओं को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, नियमित स्वास्थ्य जांच करवाने तथा जागरूक रहने के लिए भी प्रेरित किया गया।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 24 मई 2026

जीवन की दिशा बदल देगा
जापानी मेनीफेस्टेशन

जापानी संस्कृति अपनी विशिष्ट जीवनशैली और अनूठे दर्शन के लिए पूरी दुनिया में जानी जाती है। यहां पर मेनीफेस्टेशन को केवल इच्छा पूर्ति का साधन ही नहीं, बल्कि अनुशासन, कृतज्ञता और ब्रह्मांड के साथ तालमेल बिठाने की एक कला भी माना जाता है। इसमें कई ऐसी कारगर तकनीकें अपनाई जाती हैं, जो आपके जीवन को पूरी तरह सकारात्मक दिशा में मोड़ देती हैं। इनमें से कुछ तकनीकों के बारे में जानिए।

{ कवर स्टोरी / शिखर चंद जैन }

एक मशहूर जापानी कहावत है- 'सात बार गिरो, आठ बार उठो।' इससे ही साबित होता है कि जापानी संस्कृति और जीवनशैली में कितनी सकारात्मकता शामिल है। जापानी जीवनशैली और दर्शन में जीवन की धारा बदलने के लिए मेनीफेस्टेशन के नायाब और बेहतरीन तरीके मौजूद हैं। जापानी मेनीफेस्टेशन को इच्छा पूर्ति का साधन मात्र नहीं माना जाता है। यह जीवन में संतुलन बनाने और तालमेल बिठाने की एक कला सिखाता है। जापानी मेनीफेस्टेशन तकनीकें हमें सिखाती हैं कि सपने देखना केवल पहला कदम है। उन सपनों को अनुशासन, कृतज्ञता और धैर्य के साथ सींचना ही असली कला है। कह सकते हैं कि मेनीफेस्टेशन का असली जादू, हार न मानने वाले जज्बे में छिपा होता है।

क्या है जापानी मेनीफेस्टेशन

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर व्यक्ति अपने सपनों को साकार करना चाहता है। उसके लिए हर संभव प्रयास करता है। पश्चिमी देशों में 'लॉ ऑफ अट्रैक्शन' की चर्चा जोरों पर है। लेकिन इसके विपरीत पूर्व में, विशेषकर जापान में, इच्छा पूर्ति के लिए सदियों पुराने ऐसे तरीके मौजूद हैं, जो न केवल प्रभावी हैं बल्कि व्यक्ति के चरित्र निर्माण में भी मदद करते हैं। जापानी मेनीफेस्टेशन तकनीकें केवल सोचने पर नहीं, बल्कि हमारे प्रयास करने और सपने साकार होने के गहरे संतुलन पर आधारित होती हैं। यहां जापानी मेनीफेस्टेशन से जुड़ी कुछ पद्धतियों के बारे में बता रहे हैं।

योशुकु करें सफलता का पूर्वाभास

यह एक प्राचीन जापानी तकनीक है, जिसे प्री सेलिब्रेशन के रूप में जाना जाता है। इसका मूल सिद्धांत यह है कि आप अपनी सफलता की खुशी पहले ही मना लें, ताकि उसे हकीकत में बदला जा सके। जापानी संस्कृति में यह माना जाता है कि 'भविष्य को वर्तमान में जीना' सफलता को आकर्षित करता है। यह उस भावना को पूरी तरह महसूस करने के बारे में है, जो आपको लक्ष्य प्राप्त करने के बाद होगी। इसमें कहा जाता है कि सबसे पहले स्पष्ट करें कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं? इसके बाद इमेजिन करें कि वह सफलता आपको प्राप्त हो चुकी है। इसे रियल फील करने के लिए अपने दोस्तों या परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों के साथ एक छोटी-सी पार्टी करें, दूसरों की 'बधाई' स्वीकार करें। आंखें बंद करें और इमेजिन करें कि आप क्या पहन रहे हैं, कौन आपके पास है और आप कैसा महसूस कर रहे हैं? फिर ब्रह्मांड को 'धन्यवाद' कहें जैसे कि काम पहले ही पूरा हो चुका है। या फिर अपनी डायरी में आज की तारीख डालें और लिखें, 'आज मैंने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया और मुझे बहुत खुशी हो रही है।' योशुकु दिमाग की प्रोग्रामिंग को प्रभावित करता है। यह आपके अवचेतन मन को सफलता के लिए ट्यून करता है। जब आप पहले ही 'जीत' महसूस करते हैं, तो असफलता का डर खत्म हो जाता है।

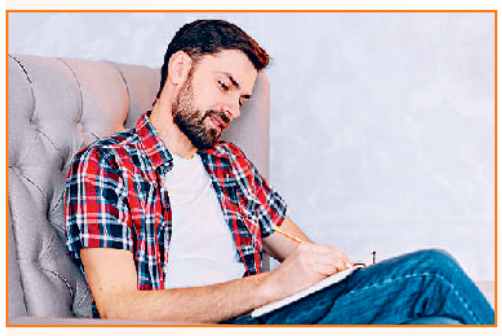

अरिगातो व्यक्त करते रहें कृतज्ञता

जापानी संस्कृति में 'कृतज्ञता' को सबसे बड़ी ऊर्जा माना गया है। 'अरिगातो' यानी धन्यवाद शब्द में जापानी लोग जादू मानते हैं। इस दर्शन के तहत मेनीफेस्टेशन की खास एक तकनीक है-'पैसों को धन्यवाद देना'। जब आप पैसे खर्च करते हैं, तो मन ही मन उसे 'अरिगातो' कहें ताकि वह समाज में खुशी फैलाए। जब पैसे आएं, तब भी 'अरिगातो' कहें। यह सकारात्मक ऊर्जा का एक चक्र बनाता है, जो प्रचुरता को आकर्षित करता है। आप स्वयं को संपन्न मानकर ज्यादा आत्मविश्वास के साथ काम करते हैं।

कइजन हर दिन सीखें नई तकनीक

मेनीफेस्टेशन केवल कल्पना करना नहीं होता है। कइजन तकनीक कहती है कि हर दिन केवल 1 प्रतिशत सुधार करें। अगर आप अमीर बनना चाहते हैं, तो हर दिन धन प्रबंधन के बारे में एक छोटी-सी ही सही कोई उपयोगी बात या तरीका सीखें। यह निरंतरता आपके अवचेतन मन को विश्वास दिलाती है कि आप बदल रहे हैं, और यही विश्वास हकीकत को बदल देता है।

कहने का सार है कि जापानी जीवनशैली और संस्कृति, मेनीफेस्टेशन के जरिए जीवन की धारा सकारात्मक दिशा में मोड़ने के लिए प्रेरित करती है। *

दारुमा गुड़िया संकल्प की दिलाए याद

दारुमा गुड़िया जापान की सबसे प्रसिद्ध मेनीफेस्टेशन तकनीकों में से एक है। यह लाल रंग की गोल गुड़िया होती है, जिसकी आंखें खाली यानी सफेद होती हैं। जब आप कोई बड़ा लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो दारुमा की बाईं आंख को काले रंग से भरते हुए अपनी इच्छा दोहराएं। अब इस गुड़िया को घर के किसी ऐसे कोने में रखें, जहां आपकी नजर बार-बार पड़े। जब वह लक्ष्य पूरा हो जाए, तब इसकी दूसरी (दाईं) आंख को काले रंग से भरें। यह तकनीक हमें लगातार हमारे संकल्प की याद दिलाती रहती है।

एमा ब्रह्मांड को अपनी इच्छा सौंपने की तकनीक

एमा एक तरह की प्रार्थना पट्टिकाएं होती हैं। जापानी मंदिरों (शिंतो मंदिरों) में लकड़ी की पट्टिकाएं लगी होती हैं, जिन्हें एमा कहा जाता है। लोग इन पर अपनी इच्छाएं लिखकर मंदिर में टांग देते हैं। यह आत्मसमर्पण की प्रक्रिया है। अपनी इच्छा को लिखकर ब्रह्मांड (या ईश्वर) को सौंप देना तनाव को खत्म करता है और आत्मविश्वास बढ़ाता है। जिससे मेनीफेस्टेशन की गति बढ़ जाती है।

इस बात में कोई दो राय नहीं है कि हमारी वर्तमान पहचान, हमारे अतीत पर टिकी होती है। यह इस बात पर निर्भर करती है कि हम अपनी स्मृतियों से कितना जुड़े हैं, उसे कितना मान देते हैं। आज तकनीक हमें अपने अतीत, रिश्तों और संवेदनाओं से निरंतर दूर कर रही है। ऐसे में स्मृतियों को संजोने का संकट खड़ा हो गया है।

स्मृतियां ही संजोती हैं यादें-रिश्ते-विरासत

{ जीवनशैली / लोकमित्र गौतम }

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में जहां लोग भविष्य की दौड़ में लगातार आगे बढ़ रहे हैं, वहीं पीछे छूटती स्मृतियां हमें बार-बार यह याद दिलाती हैं कि बिना जड़ों के कोई भी वृक्ष लंबे समय तक हरा-भरा नहीं रह सकता। बचपन की शरारतें, बुजुर्गों की सीखें, संघर्षों की कहानियां, देश के इतिहास की गौरव गाथाएं और अपनों के साथ बिताए छोटे-छोटे पल, ये वो धरोहरें हैं, जो इंसान को अंदर से संपन्न बनाती हैं। वास्तव में स्मृतियां ही हर सभ्य समाज की सांस्कृतिक और भावनात्मक पूंजी होती हैं। जिस समाज की अपनी स्मृतियां जीवित रहती हैं, उसकी संवेदनाएं भी जीवित रहती हैं।

तस्वीरों से नहीं रहा भावनात्मक जुड़ाव: आज का डिजिटल युग स्मृतियों को एक अजीब से मोड़ पर ले आया है। हमारे हाथ में मौजूद मोबाइल फोन में एक ही समय पर लाखों तस्वीरें मौजूद होती हैं। जबकि पिछली सदी के श्याम-श्वेत जमाने में लोग कुछ फोटोज को हमेशा अपने सीने से लगाए रहते, उससे जुड़ी यादों के सहारे कभी हंस तो कभी रो लिया करते थे। एक दौर था, जब हमारे पास कई सारी तस्वीरें होना बहुत बड़ी खुशी देने वाली बात होती थी। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब शायद ही कोई व्यक्ति हो, जिसके मोबाइल में अपनी और अपनों की बेशुमार तस्वीरें न हों। लेकिन शायद ही उन तस्वीरों से कोई भावनात्मक जुड़ाव महसूस होता हो, जैसे पहले होता था। तस्वीरों को लेकर स्मृतियों का गायब होना या तस्वीरों को लेकर हमारे दिलोदिमाग में कोई खास पल, कोई खास मौका याद न आना, इस बात का सबूत है कि अब तस्वीरें हमारे जेहन में अपनी वैसी जगह नहीं बनातीं, जैसे पहले बनाया करती थीं।

स्मृतियां बनाती हैं संवेदनशील: स्मृतियां व्यक्ति को एक संवेदनशील नागरिक बनाने में भी महत्ती भूमिका निभाती हैं। बचपन के दिन, गांव की गलियां, मां के साथ जुड़ी अनगिनत स्मृतियां, दादा-दादी की कहानियां, शिक्षकों की सीखें और ऐतिहासिक घटनाओं के एहसास से बनी स्मृतियां वाकई यही सब चीजें होती हैं, जो हमें एक बेहद संवेदनशील मनुष्य बनाती हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी स्मृतियों से कट जाता है, तो वह अपने मूल से अपने जीवन के सबसे गहन हिस्से से कट जाता है। इसलिए राष्ट्रीय स्मृति दिवस हमें अपनी जड़ों से और अपने मूल से जुड़ने की प्रेरणा देता है।

स्मृतियों की सांस्कृतिक महत्ता: जब हम अपनी उपलब्धियों और संघर्षों को याद करते हैं, तब हम केवल इतिहास से नहीं गुजर रहे होते हैं, बल्कि अपने वर्तमान को भी मजबूत बना रहे होते हैं। हमारे अपने देश भारत में तो स्मृतियों का और भी गहरा महत्व है, क्योंकि हमारी समृद्ध विरासत लिखित होने से ज्यादा मौखिक है। लोककथाएं, लोकगीत, रामायण, महाभारत की कथाएं, गांवों और खेड़ों की दास्तानें, हमारे यहां पीढ़ी दर पीढ़ी ये स्मृतियां अगली पीढ़ियों को मिलती रहती हैं। यही कारण है कि भारतीय समाज में स्मरण को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व तक दिया गया है।

प्रदान करती हैं भावनात्मक शक्ति: आज के समय में स्मृतियों का एक और महत्व है, क्योंकि आज हम उन्हें मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी देखते हैं। सकारात्मक यादें, हर इंसान को भावनात्मक शक्ति देती हैं। परिवार के साथ बिताए गए मधुर क्षण, मित्रों की संगति या किसी प्रेरणादायक घटना की स्मृति, हमारे कठिन समय का सहारा होती है, क्योंकि उसमें सामाजिक जुड़ाव और भावनात्मक संतुलन की मजबूती होती है। हालांकि हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि स्मृतियों का संबंध केवल सुखद अनुभव और यादों से ही नहीं होता है। इतिहास की त्रासदियां भी इंसान के सामूहिक स्मृति का हिस्सा होती हैं। युद्ध, महामारी, विभाजन या प्राकृतिक आपदाएं, मुनष्य को न केवल गहरे तक झकझोरती हैं बल्कि लंबे समय के लिए एक टीस हो जाती हैं। फिर इन्हें याद रखना इसलिए जरूरी होता है ताकि हम भविष्य में ऐसी गलतियों को न दोहराएं।

इसलिए जरूरी है अपनी स्मृतियों से जुड़ाव: अपनी स्मृतियों से जुड़ाव बनाए रखना इस दृष्टि से नई पीढ़ी के लिए विशेष रूप से प्रभावी है, क्योंकि बच्चों और युवाओं में अपने परिवार और समाज के प्रति जो संवेदनशीलता और सामाजिक जुड़ाव का भाव आता है, वह इन स्मृतियों का ही नतीजा होता है। दादा-दादी की जीवन यात्राएं, पुराने संघर्षों की कहानियां और पारिवारिक परंपराएं, युवा पीढ़ी को जीवन के गहरे अर्थ समझाने में मदद करती हैं। लेकिन राष्ट्रीय स्मृति दिवस हमें यह भी सिखाता है कि आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाना भी बहुत जरूरी है। तकनीक का इस्तेमाल स्मृतियों को सहेजने के लिए तो किया जा सकता है, लेकिन अगर इसी तकनीक की चकाचौंध के गुलाम बने रहे, तो स्मृतियों को बनने का मौका नहीं मिलता।

तकनीक का हो संतुलित इस्तेमाल: आज की युवा पीढ़ी की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह अपने दिन का बहुत बड़ा समय, अपने मोबाइल फोन के साथ अकेले में गुजारते हैं। स्मृतियों पर यह बहुत बड़ा हमला है। जब हम अपने दिन का ज्यादातर खाली समय मोबाइल फोन को दे देंगे, तो भला हमारी याद रह जाने वाली स्मृतियां कब बनेंगी, किससे बनेंगी? इसलिए स्मृतियों के संबंध में तकनीक का अंधाधुंध इस्तेमाल थोड़ा फायदा लेकिन बहुत ज्यादा नुकसान भी देता है। क्योंकि भावनाओं का स्थान कभी तकनीक नहीं ले सकती। इसलिए हमें ध्यान रखना चाहिए कि तकनीक हमारे जीवन में इतनी अधिक हावी न हो जाए कि जो हमसे हमारी स्मृतियों को ही दूर करने लगे। *

{ दोहे / डॉ. शरद नारायण खरे }

दिन बरसाता आग

सूरज आतिश बन गया, तपे नगर सब गांव।
जीवों में अकुलाहटें, ढूंढ़ रहे सब छांव।।
लू चलती है गति लिए, बिलख रहा इंसान।
सब नदियों से छिन गई, अब बस सारी आन।।
चाबुक सड़कों पर चले, आतंकित हर एक।
दिनकर के तो आजकल, नहीं इरादे नेक।।
कूलर, पंखे हंस रहे, शीतलता का मान।
मटके ने इस पल 'शरद', पाया नवल विहान।।
किरणें ना किरणें लगें, बरस रही है आग।
बचना तुम चाहे अगर, तो लो बचकर भाग।।
कंबल अब बेकार हैं, बिरथा ऊनी वस्त्र।
किरणें हमले कर रहीं, बनकर नित ही शस्त्र।।
नीर सरीखा बह रहा, तन से बेहद स्वेद।

इस मौसम में हो रहा, हर इक जन को खेद।।
बिजली लगती है सुखद, जिससे झरती शीत।
हम तुम, सब ही कष्ट में, सुन लो मेरे मीत।।
सुबह हमें लगती भली, दिन बरसाता आग।
फिर जी-भर फुंफकारता, आतप का तो नाग।।
नीर गिरे आकाश से, देखे मानव राह।
पर अब इस पल जग रही, हर दिल से ही आह।।

{ व्यंग्य / डॉ. मुकेश असीमित }

सड़क का दर्शनशास्त्र

सड़क का भी एक दर्शन होता है, खासकर उस सड़क का, जो खुद सड़कछाप हो। वह सड़क जो कहीं टिककर नहीं रहती, हर मोहल्ले, हर मोड़, हर चुनावी वादे में आवारगी करती मिल जाती है। आजकल ऐसी सड़कें खूब चलन में हैं। चलन में इसलिए कि चलने लायक कम और दिखने लायक ज्यादा होती हैं।

सड़क साम्यवाद का जीवंत, धूल-धूसरित उदाहरण है। यहां गधे और घोड़े एक ही ताल में चलते हैं। कभी-कभी तो पहचान ही गड़बड़ा जाती है कि कौन-सा किस श्रेणी में है। पशु, पक्षी, मानव सबको सड़क समान भाव से अपनाती है। सड़क सबकी मां है। अब अगर मां की गोद में बैठकर कोई पूछे कि गधे-घोड़े का फर्क क्यों नहीं दिख रहा, तो इसमें मां का क्या दोष! सड़क तो बस बनी है आओ, चलो, दौड़ो, गिरो, रौंदो, जो लिखा लाए हो, वही होगा। आप सड़क पर हैं या सड़क पर लाए गए हैं, यह नियति का मामला है, सड़क का नहीं।

सड़क और संसद का रिश्ता भी बड़ा दार्शनिक है। आदमी कब सड़क से संसद पहुंच जाए और कब संसद से सड़क पर लौट आए, कहा नहीं जा सकता। जनता सड़क के रास्ते ही नेताओं को संसद का पता देती है और उसी रास्ते से वापसी का न्योता भी। इसलिए सड़क है तो संभावनाएं हैं धरने की, हड़ताल की, रैली की, जाम की और कभी-कभी नंगे नाच की भी। सड़क लोकतंत्र की खुली प्रयोगशाला है।

सड़क है तो गड्ढे हैं। गड्ढे हैं तो मरम्मत है। मरम्मत है तो बजट है। बजट है तो फाइलें हैं। फाइलें हैं तो अफसर का चूल्हा जलता है। सड़क सरकार का बहुउद्देशीय औजार है। शौचालय, पेशाबघर और कचरा निस्तारण की कई योजनाओं से बचा लेती है। लोग सड़क पर ही अभ्यास कर लेते हैं, और सड़क 'राइट एट योर डोरस्टेप' कचरा सेवा दे देती है बिना टेंडर, बिना उद्घाटन।

कोरोना के दिनों में जब सड़कें सूनी हुईं, तो उन्हें भी बुरा लगा। पर जल्दी ही फैक्ट्री मालिकों ने मजदूरों को निकाला और सड़कें फिर गुलजार हो गईं। मजदूरों के रेलों ने सड़कों को धन्य कर दिया, मां की गोद फिर भर गई।

सड़कें हैं तो एक्सीडेंट हैं। ट्रैफिक पुलिस का डंडा अभियान निरंतर है। चालान से जेबें भी फुल टॉस फूल रही हैं। सड़कें हैं तो फुटपाथ हैं, और फुटपाथ हैं तो उन पर सोते लोग। वरना नशे में धुत्त रईसों को कुचलने के लिए लोग मिलेंगे कहां? सड़कें ही तो हैं जो रील और सेल्फी प्रेमियों की कर्मभूमि हैं, जहां जोखिम जितना बड़ा, व्यू उतने ज्यादा।

सड़कें हैं तो सड़कछाप गुंडे भी हैं। राजनीति की प्रारंभिक पाठशाला यही है। रेहड़ियों से शुरू हुई हफ्तावसूली आगे चलकर बड़े घोटालों का पाठ्यक्रम बनती है। सड़क कैडर तैयार करती है, छुटभैये से गैंगस्टर तक।

आजकल सड़कों पर ध्यान कम है। ध्यान दें भी तो कैसे, सड़कें बड़ी बेवफा हैं। बनाई नहीं कि उखड़ने को तैयार। इतना भी सब्र नहीं कि एक चुनावी कार्यकाल पूरा हो जाए। मरम्मत का बजट पास होते-होते नेता बदल जाता है और क्रेडिट कोई और ले जाता है। समाधान सरल है हर नेता अपने नाम की सड़क बनवाए। चुनाव हार जाए तो सड़क उठाकर घर ले जाए।

सड़कें मां जैसी ही होती हैं। पान की पीक, कचरा, मल-मूत्र सब समेट लेती हैं, बिना शिकायत। अब प्रश्न उठता है मां तो सड़क है, बाप कौन? जब भी सड़क पर वाहन चालकों के बीच बहस या हाथापाई की नौबत आती है तो पहला सवाल यही पूछा जाता है, 'सड़क तेरे बाप की है क्या?' पर बाप का पता आज तक नहीं चला। मिलते ही इसकी सूचना दी जाएगी।

कभी-कभी सड़कें उधड़ती हैं ताकि शहर को ग्रामीण जीवन की झलक मिल सके कंक्रीट, धूल, मिट्टी, जमीन से जुड़े रहने का प्रशिक्षण। चिकनी सड़क पर खेलेंगे तो बच्चों की इम्युनिटी कैसे बनेगी?

सड़कें पतित-पावनी भी हैं, मोक्षदायिनी भी। प्राचीन योगियों की परंपरा आज सड़कें निभा रही हैं। कहीं दुर्गम, कहीं अदृश्य, कहीं कीचड़, कहीं खाई। हैं भी, नहीं भी-ब्रह्मस्वरूप। फाइलों में हैं, वादों में हैं, पर चलने में अकसर नहीं। न शुरुआत दिखती है, न अंत। कोई पूछे, 'यह सड़क कहां जाती है?' भाग्यशाली हैं वे जिनकी जाती है। यहां तो सालों से देख रहे हैं नजर ही नहीं आती।

सड़कें वही हैं जहां चाहो मोड़ लो, बिना शिकायत। और अगर सरकारी बजट की हों, तो नेता जी उन्हें अपने बंगले तक भी ले जा सकते हैं। सड़कछाप सड़क बस महसूस करने की चीज है। मानने की, जानने की नहीं। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

सामाजिक बदलाव की कहानियां

वरिष्ठ कथाकार कैलाश बनवासी का आठवां कथा संग्रह 'हवा बहुत तेज है' हाल में प्रकाशित होकर आया है। इसमें संकलित ग्यारह कहानियों में मध्य वर्गीय जीवनशैली के विभिन्न स्तरों में हाल के वर्षों में हुए बाहरी ही नहीं आंतरिक बदलावों की भी सूक्ष्म पड़ताल की गई है। शीर्षक कहानी 'हवा बहुत तेज है' के मुख्य पात्र जगन्नाथ बाबू अपने आस-पास के बदलावों, सामाजिक बहुरूपिएपन, नई पीढ़ी की सोच के बीच विस्मित नजर आते हैं तो अभूतपूर्व छल के समय में सामान्य सी ईमानदारी भी कितनी असामान्य लगती है, इसे 'एक पुराना आदमी' कहानी में प्रकट किया गया है। बाजारवाद के प्रभाव को 'दाग अच्छे हैं' कहानी में व्यक्त किया गया है। संग्रह की सभी कहानियां ठहरकर विचार करने को बाध्य करती हैं। *

पुस्तक: हवा बहुत तेज है (कहानी संग्रह), लेखक: कैलाश बनवासी,
मूल्य: 299 रुपए, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

{ लघुकथा / डॉ. यशोधरा भटनागर }

गूंज

दरवाजा खुलते ही रात का अंधियारा मंगलू के साथ घर में घुस आया था। कच्चे-पक्के घर में चूल्हे के गहरे स्लेटी धुएं में लालटेन की रोशनी अपना प्रकाश फैलाने के लिए जूझ रही थी।

'छुटका.. ऐ छुटका! ऐ कमली..! कितै को मर गए रे सब कै सब?' लड़खड़ाते कदमों से घर में घुसते हुए मंगलू चीखते हुए बोला।

एक तीखी गंध पूरे घर में पसर गई।

आठ बरस का दीपू कमरे की कच्ची दीवार से चिपका सहमा हुआ उसे देख रहा था।

मंगलू ने जेब से आधी भरी बोतल निकाली और जोर से चिल्लाया, 'का देख रया है बे! दौड़ कै एक गिल्लास लाओ हमाए लाने।'

कुछ पल बाद दीपू स्टील का गिलास मंगलू के हाथ में थमाते हुए बोला, 'बापू, आज स्कूल में टीचर ने पूछो हतो कि हम बड़े होकर का बनेहैं?'

मंगलू ने उसको चपतियाते हुए पूछा, 'तुमने का कहौ फिर?' दीपू थोड़ी देर चुप खड़ा रहा फिर अपनी पूरी हिम्मत बटोर कर बोला, 'बापू हमने कह दओ कि हम बड़े होकर तुमाओ जैसा नहीं बनहैं।'

'टन्न...!'

टन्न की यह जोरों की गूंज, घर की कच्ची दीवारों में समा गई।

दरअसल, मंगलू ने गिलास सामने रखे खाली कनस्तर पर दे मारा था।

मंगलू ने गुस्से से दीपू की ओर देखा, बेटे की आंखें आईने की तरह साफ थीं। इन आंखों में उसे खुद का विकृत चेहरा साफ नजर आ रहा था। *

परंपरा-संस्कृति का मोहक आयोजन
तमिलनाडु का येरकौड उत्सव

दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु अपनी संस्कृति, परंपरा और लोकपर्वों के लिए मशहूर है। राज्य पर्यटन विभाग द्वारा हर वर्ष आयोजित होने वाला येरकौड उत्सव भी इन्हीं सांस्कृतिक आयोजनों में से एक है। यहां पर्यटक विभिन्न तरह के अनुभवों का आनंद ले सकते हैं। इस उत्सव की खासियतों पर एक नजर।

{ सांस्कृतिक उत्सव
धीरज बसाक }

दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु के सलेम जिले में स्थित एक प्रसिद्ध हिल स्टेशन है-येरकौड। समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह हिल स्टेशन, शेवरॉय पहाड़ियों पर बसा है, जहां कॉफी, मसालों, फूलों और फलों की शानदार और सघन खेती होती है। धुंध से ढंकी पहाड़ियों व झीलों के लिए मशहूर पर्वतीय नगर येरकौड सिर्फ अपनी प्राकृतिक सुंदरता और फल-फूलों की खेती के लिए ही नहीं जाना जाता बल्कि यह जनजातीय संस्कृति, लोकनृत्य, पारंपरिक संगीत और स्थानीय हस्तशिल्प का भी गढ़ है। ये सब खूबियां मिलकर इस क्षेत्र को सांस्कृतिक रूप से बेहद समृद्ध बनाती हैं। यहां की इन्हीं खूबियों को देश-दुनिया के सामने लाने के लिए हर साल येरकौड उत्सव मनाया जाता है। आमतौर पर मई महीने के अंतिम सप्ताह में मनाया जाने वाला यह रंगीन-सांस्कृतिक उत्सव इस साल 22 मई से शुरू हो चुका है और 28 मई 2026 तक आयोजित होगा।

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यमः इस उत्सव की शुरुआत तमिलनाडु पर्यटन विभाग और स्थानीय प्रशासन ने मुख्यतः दो उद्देश्यों से की थी। पहला येरकौड की सांस्कृतिक पहचान और स्थानीय परंपराओं को बढ़ावा देने के लिए तथा दूसरा, पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए। धीरे-धीरे यह आयोजन केवल पर्यटकों को लुभाने वाला उत्सव ही नहीं रहा बल्कि स्थानीय लोगों की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का प्रमुख मंच बन गया। आज इस उत्सव से जुड़कर सैकड़ों कलाकारों, किसानों, जनजातीय समुदायों, हस्तशिल्पियों, लोकनर्तकों और संगीतकारों की भी न केवल पहचान बनी है बल्कि यह उनकी समृद्धि का जरिया भी बना है। सिर्फ येरकौड की स्थानीय संस्कृति ही नहीं, तमिलनाडु की सांस्कृतिक पहचान को चमकदार बनाने में भी येरकौड उत्सव ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। येरकौड का सांस्कृतिक उत्सव शेवरॉय पहाड़ियों में रहने वाली जनजातियों की सांस्कृतिक आत्मा है।

लोकनृत्यों का भी होता है आयोजन

उनके लोकनृत्य, उनकी पारंपरिक वेशभूषा, उनका स्थानीय लोकसंगीत, रीति-रिवाज, इस उत्सव के न केवल आकर्षण हैं बल्कि उन्होंने तमिलनाडु और दुनिया के दूसरे हिस्सों को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। यही कारण है कि दक्षिण भारत में बड़े पैमाने पर लोग इस मौके पर यहां आकर अपनी रोजमर्रा की भाग-दौड़ भरी जिंदगी के बीच आह्लादित करते सुकून के पल महसूस करते हैं।

परंपरा-आधुनिकता का संगमः उत्सव के दौरान यहां के स्थानीय कलाकार अपनी लोक-लुभावन वेशभूषाओं में जुलूस निकालते हैं तथा तमिल लोक-जीवन की शानदार झांकी प्रस्तुत करते हैं। यह उत्सव एक साथ न केवल यहां की सांस्कृतिक उत्सवधर्मिता को प्रस्तुत करता है बल्कि आधुनिक जीवनशैली और पारंपरिक लोक संस्कृति का एक लुभावना फ्यूजन भी प्रदर्शित करता है। इसलिए येरकौड उत्सव को स्थानीय संस्कृति के संरक्षण का महत्वपूर्ण जरिया माना जाता है, क्योंकि यह नई पीढ़ी को जितनी उत्सुकता और रोमांच के साथ आकर्षित करता है, उतनी ही तीव्रता के साथ पुरानी पीढ़ी को भी इस उत्सव के साथ जोड़ता है।

मनमोहक उत्सव की अनोखी छटाः तमिल लोकसंगीत, नादस्वरम, करगट्टम और कवड़ी की पारंपरिक धुनों तथा स्थानीय नृत्य प्रस्तुतियों से यह उत्सव अलौकिक अनुभूति प्रदान करता है। शाम ढलते ही पूरा शहर लोकधुनों और अलग-अलग जगहों पर हो रहे सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जीवंत हो उठता है। इस उत्सव में हिस्सा लेने आए सैलानी संतरे का स्वाद तथा फूलों की खुशबू का खूब लुत्फ उठाते हैं। लौटते वक्त विशेष रूप से यहां की मशहूर कॉफी और कालीमिर्च जैसे मसाले अपने साथ ले जाना नहीं भूलते हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्णः येरकौड महोत्सव सिर्फ स्थानीय लोक संस्कृति का उत्सव भर नहीं है बल्कि जीवनशैली और जीवन यापन का भी संगीतमय उत्सव है। इस उत्सव में स्थानीय फलों और कृषि उत्पादों की विशेष झांकियां लगाई जाती हैं, जिससे आने वाले पर्यटकों को शुद्ध और विशिष्ट कृषि उत्पाद तो हासिल होते ही हैं, यहां के किसानों की अच्छी-खासी आय भी इस उत्सव के जरिए हो जाती है। यहां का हस्तशिल्प भी अपनी तरह की विशिष्टता के लिए जाना जाता है। विशेषकर यहां के बांस के उत्पादों को लोग खूब पसंद करते हैं। कुल मिलाकर यह प्रकृति, स्थानीय संस्कृति और सामुदायिक जीवन का साझा उत्सव है। इसमें फूलों की खुशबू के साथ लोकधुनें गूंजती हैं और पहाड़ों की ठंडी हवाओं के साथ परंपराओं की गर्माहट का आनंद भी मिलता है। *

फ्लावर शो-बोट रेसिंग का आकर्षण

येरकौड लोक उत्सव की दो और महत्वपूर्ण खासियतें हैं, जिसमें एक है फ्लावर शो और दूसरा है नौका दौड़। येरकौड उत्सव इन दोनों आयोजनों के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है। फ्लावर शो के दौरान यहां पाए जाने वाले सैकड़ों किस्म के खुशबूदार और रंग-बिरंगे फूलों की कलात्मक सजावट पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। इस उत्सव के दौरान येरकौड झील में एक बोट रेस भी आयोजित की जाती है, जो इस उत्सव का एक विशेष आकर्षण होती है। दूर-दूर से आए पर्यटक उत्सव के दौरान नौकायन का भरपूर आनंद लेते हैं।

इस तपिश में पक्षियों को देगा राहत
थोड़ा सा दाना-थोड़ा सा पानी

इन दिनों की तपती गर्मी से हम सब इंसान ही नहीं नन्हे बेजुबान पक्षी भी बेहद बेचैन हैं। दिन के समय इनके लिए दाने-पानी को खोजना बहुत कठिन हो जाता है। इन पक्षियों की बेचैनी को कम करने के लिए हम सब उनके लिए थोड़े से दाने और पानी का इंतजाम कर उनको बड़ी राहत दे सकते हैं।

{ सरोकार / के. पी. सिंह }

तपती दोपहरी में जब धरती अंगारों की तरह दहकती है और आसमान से आग बरसती महसूस होती है, तब सबसे ज्यादा संकट, उन नन्हे परिंदों पर आता है, जिनकी चहचाहट हमारी सुबहों को जीवंत बनाती है। पानी की कुछ बूंदें और अनाज के कुछ दाने उनके लिए जीवनदायी बन सकते हैं। इसलिए अगर हम सब इन बेचैन करने वाली गर्मी के दिनों में अपने घर की छत, बालकनी या खिड़की के बाहर बने स्पेस पर एक कटोरा पानी का भरकर रख दें और उसी जगह एक मुट्ठी दाना डाल दें तो यह नन्हे परिंदों को जिंदगी की बहुत राहत देगा। यह छोटा-सा प्रयास उनके लिए सुरक्षित ठिकाना और जिंदगी का सहारा बन सकता है।

बढ़ते ताप से पक्षी होते बेहालः बीते कुछ दिनों से गर्मी का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है। इसके चलते हम इंसानों से भी ज्यादा शहरों की सड़कों से लेकर गांव के खुले आकाश तक पक्षियों के लिए भारी संकट पैदा हो गया है। देखने में आ रहा है कि पिछले कुछ सालों से गर्मी के दिनों में तापमान में लगातार हो रही वृद्धि, पक्षियों के प्राकृतिक जीवन चक्र को बाधित कर रहा है। पहले जहां 38 से 40 डिग्री का तापमान मई के आखिरी दिनों में हुआ करता था, वहीं अब यह अप्रैल के अंतिम सप्ताह से लेकर मई के पहले सप्ताह में होने लगा है। इन दिनों तो कई जिलों में तापमान 45 डिग्री सेंटीग्रेड को भी पार कर रहा है। जब गर्मी इतनी ज्यादा पड़ती है तो छोटे पक्षियों के लिए यह बहुत चुनौती बन जाती है। उनके लिए सुरक्षित आश्रय और दाना-पानी की जबर्दस्त किल्लत हो जाती है। पक्षियों का शरीर छोटा और बेहद संवेदनशील होता है, इससे वे तापमान में हल्के बदलाव से भी प्रभावित होते हैं। गर्मियों में जब जलस्रोत सूखने लगते हैं, तो उन्हें पानी की तलाश में दूर-दूर तक उड़ान भरनी पड़ती है। इस दौरान उनकी ऊर्जा तेजी से खत्म होती है और कई बार पानी की तलाश में ही वो हीट स्ट्रोक का शिकार हो जाते हैं।

शहरी क्षेत्रों में बड़ी समस्याः शहरी क्षेत्रों में गर्मी की स्थिति और गंभीर है। कंक्रीट के जंगलों में न तो पेड़ों की छाया बची है और न ही प्राकृतिक जलस्रोत। यही कारण है कि कबूतर, गौरैया, कौआ, मैना जैसे पक्षी भी अब पानी के लिए तरसने लगे हैं। कई रिपोर्ट्स में यह सामने आया है कि हर साल गर्मियों में उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक हजारों पक्षी सिर्फ प्यास और अत्यधिक गर्मी के कारण दम तोड़ देते हैं। तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण लगातार पेड़ कट रहे हैं। ये पेड़ केवल ऑक्सीजन ही नहीं देते बल्कि पक्षियों के लिए भोजन और आशियाना भी होते हैं। पुराने पेड़ जिनमें पक्षी पहले घोंसले बनाया करते थे, अब नहीं लगाए जा रहे हैं। सड़कों के किनारे अब इमारती लकड़ी वाले पेड़ लगाए जाते हैं, जिसका असर यह होता है कि सड़क किनारे पेड़ होने के बावजूद उसमें पक्षी अपना घोंसला नहीं बना पाते और न ही राहगीरों को उनसे कोई छाया मिलती है। यही कारण है कि शहरों में रहने वाली गौरैया और बुलबुल जैसी पक्षियों की हाल के सालों में काफी ज्यादा संख्या कम हुई है, क्योंकि पानी और आश्रय की कमी से इंसानों की तरह पक्षी भी लू का शिकार हो जाते हैं।

कर सकते हैं ये प्रयासः अत्यधिक गर्मी में नन्हे पक्षियों का शरीर, तापमान नियंत्रित नहीं कर पाता, जिससे वे गिरकर बेहोश हो जाते हैं। इसलिए अपनी जिम्मेदारी समझते हुए हम सबको गर्मियों में अपने घरों, अपने आंगनों, खेतों, छतों और मुडेरों यानी जहां भी संभव हो, एक कटोरा पानी और एक मुट्ठी दाने का इंतजाम पक्षियों के लिए जरूर करना चाहिए। इससे इनकी जान भी बचाई जा सकती है और हमें इससे नन्हे पक्षियों की जान बचाने की खुशी भी भरपूर मिलेगी। इससे कई तरह के तनाव और लाइफस्टाइल समस्याओं से हम मुक्त रहेंगे। सरकार और पर्यावरण संगठन इस संबंध में हालांकि कई तरह के प्रयास कर रहे हैं। पक्षी बचाओ जैसे अभियान लोगों को जागरूक कर रहे हैं। लेकिन यह सिर्फ सरकार और मुट्ठी भर गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों से नहीं होगा। जैसे ही गर्मियों में पारा 40 डिग्री के पार पहुंचता है, शहरी क्षेत्रों में 70 फीसदी जलस्रोत सूख जाते हैं। इसीलिए पिछले कई सालों से हर साल विशेषकर मई से लेकर जून तक देशभर में हजारों पक्षी हीट स्ट्रोक या लू से मरते पाए गए हैं। ऐसे में हम अगर अपने घर के आस-पास या कहीं भी मिट्टी के एक बर्तन में हर रोज थोड़ा पानी भरकर रख दें और उसी के आस-पास ज्वार, बाजरा और चावल जैसे कुछ दाने भी डाल दें, तो इस छोटे से प्रयास से हर साल हजारों पक्षियों की जान बचाई जा सकती है। *

गर्मी में देंगे ठंडा एहसास
ये देसी कोल्ड ड्रिंक

देश के विभिन्न हिस्सों में गर्मी से राहत पाने के लिए अलग-अलग तरह के ड्रिंक्स पीने-पिलाने का चलन है। ये देसी कोल्ड-ड्रिंक्स, टेस्टी ही नहीं हेल्दी भी होते हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

{ सीजनल डाइट
शिखर चंद जैन }

अकसर हेल्थ एक्सपर्ट्स कार्बोनेटेड कोल्ड ड्रिंक न पीने की हिदायत देते हैं। लेकिन चिंता न करें, गर्मी और उमस से राहत पाने के लिए कई तरह के देसी ठंडे पेय आप पी सकते हैं, जो न केवल प्यास बुझाते हैं बल्कि शरीर को अंदर से ठंडा रखने में भी मदद करते हैं। दरअसल, बाजार में मिलने वाले कोल्ड ड्रिंक में अत्यधिक शुगर (चीनी), कैफीन और हानिकारक केमिकल होते हैं, जो वजन बढ़ाते हैं और डिहाइड्रेशन का कारण बन सकते हैं। इनके ज्यादा सेवन से हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं। इसके विपरीत, प्राकृतिक पोषक तत्वों से भरपूर देसी ड्रिंक्स शरीर को ताजगी देते हैं और इनका शरीर पर कोई दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता।

लस्सी

लस्सीः गर्मी के दिनों में लस्सी तो हम सब के घरों में बनती ही रहती है। इसे बनाने में न कोई झंझट है ना ज्यादा समय ही लगता है। बस अच्छी क्वालिटी के दही में चीनी मिला लें। या फिर भुना-पिसा जीरा और काला नमक मिलाकर पी लीजिए। यह शरीर को तुरंत ठंडक प्रदान करता है।

जलजीराः जीरा, पुदीना, इमली और नीबू रस के मिश्रण से तैयार यह चटपटा पेय पाचन को सुधारता है और शरीर को ठंडा रखता है। आप चाहें तो अच्छी कंपनी का जलजीरा पावडर लाकर उसमें पुदीना, नीबू का रस मिलाकर पी सकते हैं।

आम पन्नाः इन दिनों मार्केट में कैरी (कच्चा आम) भरपूर मिल रही है। कैरी को भून कर मसल लीजिए और छान कर उस पानी में हल्की-सी चीनी, जीरा और काला नमक मिला लीजिए। यह पेय लू से बचाने में रामबाण माना जाता है।

आम पन्ना

ठंडाईः दूध, सूखे मेवे और केसर से भरपूर यह ड्रिंक विशेषकर होली के समय और गर्मियों में ताजगी के लिए पी जाती है। यह शरीर को ठंडक देने के साथ-साथ पौष्टिक भी होता है।

बेल का शरबतः पके हुए बेल के गूदे से बना यह शरबत एक बेहतरीन ठंडा पेय है और पाचन में सहायक होता है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा और मध्य प्रदेश में इसका खूब सेवन किया जाता है।

सत्तू शरबतः भुने हुए चने के आटे (सत्तू), नीबू, पानी और नमक से बना यह पेय पौष्टिक होने के साथ-साथ पेट को ठंडा और शरीर को ऊर्जावान रखता है। यह मुख्य रूप से बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्रचलित है।

सत्तू शरबत

गोंधोराज घोलः यह पश्चिम बंगाल की खास छाछ है, जिसमें सुगंधित 'गोंधोराज' नामक विशेष तरह के नीबू के रस का उपयोग किया जाता है।

नीरू मज्जिगा (नीर मोर): यह पेय मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक में पिया जाता है। यह एक ठंडी छाछ है, जिसे मसाले, करी पत्ते और अदरक मिलाकर तैयार किया जाता है।

जिगरठंडाः दूध, गोंद कतीरा और नन्नारी सिरप से बना यह पेय शरीर की गर्मी को कम करने के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। खासतौर से यह तमिलनाडु के मदुरै और उसके आस-पास के इलाकों में अधिक प्रचलित है।

पनाकमः तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में गुड़, सोंठ और इलायची से बना यह पारंपरिक पेय, त्योहारों पर विशेष रूप से बनाया जाता है और गर्मी के मौसम में राहत पाने के लिए उत्तम माना जाता है।

रागी अंबालीः कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में प्रचलित यह पेय पोषण से भरपूर और शरीर को शीतलता देने वाला होता है। यह रागी (एक प्रकार का मोटा अनाज) से बना होता है। *

रागी अंबाली

'इंडियाज बेस्ट डांसर 4' और 'नच बलिए 4' जैसे रियलिटी शोज को जज कर चुकीं करिश्मा कपूर 'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में भी बतौर जज नजर आएंगी। डांसिंग जज के रूप में वह कैसा महसूस करती हैं? इस शो के पांचवें सीजन में इस बार क्या खास है? भविष्य में एक्टिंग को लेकर उनकी क्या प्लानिंग है? ऐसे ही कई सवालों के जवाब दिए करिश्मा कपूर ने इस बातचीत में।

इंडियाज बेस्ट डांसर की जज बनकर मुझे बहुत मजा आ रहा हैः करिश्मा कपूर

{ खास मुलाकात / आरती सक्सेना }

अपने दौर की टॉप एक्ट्रेसेस में शुमार करिश्मा कपूर ने शादी के बाद कुछ समय के लिए अभिनय से संन्यास ले लिया था और वह पूरी तरह घर-परिवार की जिम्मेदारियों में व्यस्त हो गई थीं। लेकिन आज हालात अलग हैं, उनके बच्चे बड़े हो चुके हैं। एक बार फिर वे एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में एक्टिव हो गई हैं। जल्द ही करिश्मा, सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन और सोनी लिव पर प्रसारित होने वाले डांस रियलिटी शो 'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में बतौर जज नजर आएंगी। इस शो और करियर से जुड़े सवाल करिश्मा कपूर से।

आप एक बार फिर 'इंडियाज बेस्ट डांसर' सीजन 5 में बतौर जज आएंगी। इस बार इस शो में आपको किस बात ने आकर्षित किया?

इस बार इस सीजन का थीम 'इंडिया वाला डांस' है। जिसका मतलब है इंडिविजुएलिटी और सेल्फ एक्सप्रेशन, यह अपनी यूनिक शैली को अपनाने, खुद पर कॉन्फिडेंस रखने और एकदम अलग दिखने से ना डरने के बारे में है। कहने का मतलब यह है कि जब प्रतियोगी सच में अपनी कला के जरिए अपनी पहचान से जुड़ते हैं, तभी उनकी परफॉर्मेंस यादगार साबित होती है। 'इंडिया वाला डांस' की इसी सोच से इंप्रेस होकर मैं एक बार फिर इस शो से जुड़ी।

बॉलीवुड के कई सुपरहिट गानों का आप हिस्सा रही हैं। 'दिल तो पागल है' में माधुरी दीक्षित के साथ आईकॉनिक डांस, गोविंदा के साथ कई डांस नंबर्स, आज भी दर्शकों के जेहन में जिंदा हैं। ऐसे में जब इस शो में आपके डांस वाले गानों पर पार्टिसिपेंट्स परफॉर्म करते हैं तो उस समय आपका क्या रिएक्शन होता है?

'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में को-जजेज के साथ करिश्मा कपूर

(मुस्कुराते हुए) पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं। बहुत खुशी होती है जब अपने डांस नंबर पर किसी को ठुमके लगाते हुए देखती हूं। मेरी फिल्मी जर्नी में डांस का अहम हिस्सा रहा है। 'इंडियाज बेस्ट डांसर' में मेरे गाने पर किया गया हर परफॉर्मेंस मुझे उन पलों की याद दिलाता है। जब पार्टिसिपेंट्स को मैं पूरी शिद्दत के साथ अपने गानों पर डांस करते हुए देखती हूं तो मुझे बहुत खुशी होती है। उनका हार्ड वर्क और डेडिकेशन इंस्पायरिंग लगता है।

आप फिल्मी बैकग्राउंड से हैं, जहां कहानी कहने में डांस ने अहम भूमिका निभाई है। ऐसे में जजिंग पैनल में आपको डांस का कौन-सा साइड अनोखा लगता है, जिसमें आप प्रतियोगी को जज करती हैं?

मेरी पूरी लाइफ फिल्मों में बीती है। 16 साल की उम्र से मैंने एक्टिंग शुरू कर दी थी। इस दौरान मैंने हमेशा डांस को एक पॉवरफुल आस्पेक्ट के रूप में देखा है। डांस न सिर्फ फीलिंग्स को एक्सप्रेस करता है बल्कि यह कहानी कहने की भी ताकत रखता है। यह शो सिर्फ डांसिंग स्टेप्स के बारे में नहीं है, बल्कि इमोशन एक्सप्रेशन और दर्शकों से जुड़ने के बारे में भी है। मैं यही नजरिया बतौर जज लाना चाहती हूं। मैं ऐसी परफॉर्मेंस देखना चाहती हूं, जो टेक्निकली सही हो, इमोशन से भरपूर और सहज हो। ऐसी परफॉर्मेंस जो दर्शकों के दिलों पर गहरा असर छोड़े।

'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में आपके साथ गीता कपूर, जावेद जाफरी और टेरेंस लुईस भी बतौर जज आ रहे हैं। उनके साथ आपका तालमेल कैसा है?

बहुत ही अच्छा है। शो की जजिंग के अलावा भी हम आपस में मजाक मस्ती करते रहते हैं। गीता जहां मस्तीखोर है, वहीं जावेद जाफरी का सेंस ऑफ ह्यूमर बहुत अच्छा है। इन सभी जजेज के साथ शो का हिस्सा बनने का अनुभव मजेदार है।

'इंडियाज बेस्ट डांसर' देश भर के उभरते कलाकारों के लिए एक अहम प्लेटफॉर्म बन चुका है। ऐसे में जो डांसर इस शो में भाग लेना चाहते हैं, ऐसे कंटेस्टेंट्स को आप क्या मैसेज देना चाहेंगी?

उनसे मैं यही कहना चाहूंगी कि अपने ऊपर विश्वास रखें, खुद के प्रति सच्चे रहें, कुछ ना कुछ नया सीखने की कोशिश करें, चुनौतियों का सामना करें, कभी निराश ना हों और ना ही हार मानें। एक दिन आपकी मेहनत जरूर रंग लाएगी। आपका टैलेंट आपको सब में अलग और अच्छा दिखाएगा। ऐसे लोगों का इस शो में स्वागत है। ये मंच ऐसे ही लोगों के लिए बना है, जहां आकर वह अपना डांसिंग टैलेंट पेश कर सकते हैं।

क्या आपके बच्चों को भी डांस और एक्टिंग में इंटरेस्ट है?

इस बारे में अभी तो मैं कुछ कह नहीं सकती, क्योंकि मेरे दोनों ही बच्चे फिलहाल पढ़ाई कर रहे हैं। भविष्य में वे कौन-सा करियर चुनते हैं, यह अभी से कहना मुश्किल है। *

मैं फिल्मों में भी काम करने के लिए तैयार हूं बशर्ते...

टीवी शोज के अलावा फिल्मों और वेब सीरीज में एक्टिंग को लेकर क्या प्लानिंग है, इस बारे में पूछने पर करिश्मा बताती हैं, 'फिल्म हो, ओटीटी हो या टीवी, मुझे हर जगह काम करने में कोई प्रॉब्लम नहीं है। बस मैं जो भी काम करूं वह अच्छा होना चाहिए। जैसे मैंने कुछ सालों पहले 'मेंटल हुड' और 'मर्डर मुबारक' वेब सीरीज की थी। फिलहाल मैं अभिनव देव के निर्देशन में 'ब्राउन' सीरीज कर रही हूं। फिल्मों में भी काम करने के लिए मैं तैयार हूं बशर्ते उसमें मेरा रोल मीनिंगफुल और दमदार होना चाहिए।'